कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

प्रकाशन एवं प्रेषण प्रत्येक मंगलवार

ISSN:2583-4991

● भोपाल मंगलवार 27 अक्टूबर से 02 नवम्बर 2026 ● वर्ष-27 ● अंक-23 ● पृष्ठ-20 ● मूल्य-20 रु. ● RNI No. MPHIN/2000/06836/डाक पंजीयन क्र.एम.पी./भोपाल/625/2024-26



रबी विशेषांक 2026



अंदर के पृष्ठों में...

- लहसुन-प्याज की खेती 5
- बीज उपचारित चना- बोले घना 7
- उन्नत तकनीक से बोयें चना 8
- मसूर की खेती फायदा अधिक देती 9
- रबी की उन्नत किस्मो से पाएं... 10
- उन्नत विधि से अलसी की खेती 11
- आधुनिक पद्वति से गेहूं की खेती 12
- फूल गोभी लगायें फायदा कमाएं 13
- फसलों में जिंक की उपयोगिता 15



अन्नदाता का साथ किसान का विकास

OSTWAL

अन्नदाता

जिंकेटेड एन.पी.के. (20:20:00:13)

सल्फर और जिंक की ताकत
ज्यादा उपज और कम लागत

अन्नदाता जिबो

अन्नदाता जिबो का वादा
मिट्टी जानदार और उपज भी ज्यादा



ओस्तवाल ग्रुप ऑफ इंडस्ट्रीज

रजिस्टर्ड ऑफिस : 5-O-20, आर.सी. व्यास कॉलोनी, भीलवाड़ा (राज.)

उत्पादक: ओस्तवाल फॉस्केम (इंडिया) लिमिटेड (भीलवाड़ा) । कृष्णा फॉस्केम लिमिटेड (मेघनगर) मध्यभारत एग्रो प्रोडक्ट्स लिमिटेड (रजौवा एवं बण्डा – सागर)

नव वर्ष पर शुभचिंतकों, मित्रों एवं प्रिय ग्राहकों को भेंट का सर्वोत्तम उपहार

कृषक दूत डायरी 2027

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख मासिक



अब नए आकर्षक आकार में

कृषक दूत डायरी 2027 के प्रमुख आकर्षण

- केन्द्र एवं राज्य पोषित विभिन्न कृषि एवं अन्य योजनाओं की जानकारी।
- प्रमुख फसलों की कृषि कार्यमाला एवं उन्नत किस्मों की विस्तृत जानकारी।
- तहसील विकासखंड, कृषि उपज मंडियों की सूची।
- फसल उत्पादन संबंधी सांख्यिकीय।
- माहवार कैलेण्डर तिथि, व्रत एवं त्यौहारों की जानकारी।

कृषक दूत की सदस्यता लेकर डायरी मुफ्त पायें

संपर्क करें ➡ कृषक दूत

एफ.एम.-16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, भोपाल (म.प्र.)

फोन : (0755) 4233824 मो. : 9300754675, 9827352535, 9425013875

Email:- krishak_doot@yahoo.co.in | Website : www.krishakdoot.org

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक अमरेन्द्र मिश्रा द्वारा के डी प्रिंटर्स, मानसरोवर काम्प्लेक्स, होशंगाबाद रोड, भोपाल से मुद्रित एवं एफ.एम. 16, ब्लॉक-सी, मानसरोवर काम्प्लेक्स, रानी कमलापति स्टेशन के सामने, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- अमरेन्द्र मिश्रा। इस अंक का मूल्य- 20/- वार्षिक शुल्क-700/- फोन: (0755) 4233824, आरएनआई नं. : MP HIN/2000/06836 Krishak Doot also available on YouTube


swaraj
SUPERSTAR CONTEST
DHONI SE MILNE KA MAUKA
जोश का राज़ मेरा swaraj
SWARAJ KE SAATH,
DHONI SE MULAQAAT.
अपने स्वराज के साथ अपने अनुभव की विडियो को
अपलोड करें और पाएं धोनी से मिलने का मौका,
साथ ही आप जीत सकते हैं ढेरों ईनाम.
आप फ़सल, खेती, इम्प्लिमेंट्स और स्वराज से जुड़े किसी भी
अनुभव को शेर कर सकते हैं.
स्कैन करें और
अपलोड करें
*नियम व शर्तें लागू

किसानों के मोबाइल पर मिलेगी खेती-किसानी की हर जरूरी जानकारी

केन्द्रीय कृषि मंत्री ने लॉन्च किया संशोधित एग्री वेलफेयर पोर्टल

नई दिल्ली। किसानों को सरकारी योजनाओं, आर्थिक सहायता और खेती-किसानी से जुड़ी महत्वपूर्ण जानकारियां आसानी से उपलब्ध कराने के उद्देश्य से केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण तथा ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने संशोधित एग्री वेलफेयर पोर्टल का शुभारंभ किया। इस पोर्टल के माध्यम से किसान घर बैठे मोबाइल पर कृषि योजनाओं, सब्सिडी और डिजिटल सेवाओं की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे।



एग्री वेलफेयर पोर्टल को कृषि मंत्रालय की विभिन्न योजनाओं और डिजिटल सेवाओं के लिए साझा प्रवेश मंच के रूप में विकसित किया गया है। इसके माध्यम से प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, एग्रीस्टैक और प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना जैसी प्रमुख पहलों तक पहुंच आसान होगी। किसानों को खाद-बीज की उपलब्धता, मौसम, वैज्ञानिक खेती की तकनीकों और मंडियों के भाव से संबंधित जानकारी भी उपलब्ध कराने का उद्देश्य है।

श्री चौहान ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि पोर्टल पर उपलब्ध जानकारी सटीक, अद्यतन और समयबद्ध होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि इसकी भाषा और प्रक्रिया सरल रखी जाए, ताकि छोटे एवं सीमांत किसान भी आसानी से इसका उपयोग कर सकें। किसानों को डिजिटल सेवाओं के इस्तेमाल का प्रशिक्षण देने के लिए देशभर के कृषि विज्ञान केंद्रों के माध्यम से विशेष अभियान भी चलाया जाएगा। कार्यक्रम में केंद्रीय कृषि एवं किसान कल्याण सचिव अतीश चंद्रा, अतिरिक्त सचिव प्रमोद मेहरदा तथा मंत्रालय और राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र के वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

खेत बचाओ अभियान का राष्ट्रव्यापी शुभारंभ

20 अक्टूबर से 30 नवंबर तक चलेगा अभियान

नई दिल्ली। केंद्रीय कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने हरियाणा के करनाल जिले के तरावड़ी में 'खेत बचाओ अभियान' की शुरुआत की। इस दौरान आयोजित किसान चौपाल में उन्होंने किसानों से खेती की लागत घटाने, मिट्टी की सेहत बचाने और प्राकृतिक खेती को बढ़ावा देने की अपील की। उन्होंने कहा कि खेतों में जरूरत से ज्यादा रासायनिक खाद डालने से मिट्टी की उर्वरता प्रभावित होती है। इसलिए किसान दूसरों की देखा-देखी खाद डालने के बजाय मिट्टी की जांच कराएं और स्वाइल हेल्थ कार्ड के आधार पर खाद का इस्तेमाल करें। उन्होंने कहा कि केंद्र सरकार किसानों की आय, सम्मान और खेती को मजबूत बनाने के लिए प्रतिबद्ध है। कार्यक्रम में हरियाणा के कृषि मंत्री श्याम सिंह राणा, स्थानीय विधायक, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद और राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों सहित बड़ी संख्या में किसान मौजूद रहे।



किसान चौपाल में शिवराज सिंह चौहान ने रासायनिक खादों के असंतुलित इस्तेमाल पर चिंता जताई। उन्होंने कहा कि खेत में बिना जरूरत खाद डालना नुकसानदेह हो सकता है। उन्होंने किसानों से मिट्टी की जांच कराने और स्वाइल हेल्थ कार्ड में दी गई सलाह के अनुसार खाद का इस्तेमाल करने की अपील की। उन्होंने किसानों से मिट्टी की सेहत का ध्यान रखने, संतुलित खाद इस्तेमाल करने, प्राकृतिक खेती के विकल्पों को समझने और आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाने की अपील की।

शीतजल मत्स्यपालन से बढ़ेगी किसानों की आय

नई दिल्ली। मत्स्यपालन विभाग के केंद्रीय सचिव डॉ. अभिलक्ष लिखी ने उत्तराखंड के पिथौरागढ़ जिले के मुनस्यारी स्थित शीतजल मत्स्यपालन क्लस्टर का दौरा कर विकास कार्यों की समीक्षा की। इस दौरान उन्होंने ट्राउट मछली पालने वाले किसानों से संवाद किया और क्षेत्र में मत्स्यपालन को आजीविका के टिकाऊ साधन के रूप में विकसित करने की संभावनाओं पर चर्चा की।



डॉ. लिखी ने 'जौहर मत्स्य स्वायत्त सहकारिता' और 'नमजाला ट्राउट फार्म' का निरीक्षण कर किसानों के अनुभव जाने। उन्होंने रेनबो ट्राउट पालन को बढ़ावा देने में स्थानीय सहकारी समितियों की भूमिका की सराहना की। उन्होंने कहा कि गोरी गंगा की ठंडी जलधारायें और अनुकूल तापमान मुनस्यारी को ट्राउट पालन का प्रमुख केंद्र बनाने में सहायक हैं। इससे क्षेत्र की पारंपरिक कृषि गतिविधियों के साथ व्यावसायिक मत्स्यपालन को भी बढ़ावा मिला है। प्रधानमंत्री मत्स्य संपदा योजना के तहत देशभर में 34 मत्स्यपालन क्लस्टर अधिसूचित किए गए हैं। पिथौरागढ़ को शीतजल मत्स्यपालन क्लस्टर के रूप में विकसित किया जा रहा है। इसका उद्देश्य मत्स्य सहकारी समितियों को मजबूत करना, स्थानीय स्तर पर रोजगार और आजीविका के अवसर बढ़ाना तथा हिमालयी क्षेत्रों में टिकाऊ मत्स्यपालन को प्रोत्साहित करना है। डॉ. लिखी ने भीमताल स्थित आईसीएआर-केंद्रीय शीतजल मत्स्य अनुसंधान संस्थान की भूमिका की सराहना की। संस्थान मछली के बीज उत्पादन, रोग प्रबंधन और किसानों के प्रशिक्षण में वैज्ञानिक सहयोग प्रदान कर रहा है। उन्होंने कहा कि शीतजल मत्स्यपालन किसानों की आय बढ़ाने के साथ पोषण सुरक्षा, निर्यात, इको-टूरिज्म और सीमावर्ती गांवों की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इसके साथ ही महासीर जैसी संकटग्रस्त मछली प्रजातियों के संरक्षण को भी बढ़ावा मिल सकता है।

सिर्फ फसल उत्पादन नहीं, पूरी खाद्य व्यवस्था पर ध्यान दे कृषि शिक्षा: डॉ. जाट

नई दिल्ली। कृषि क्षेत्र में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक संसाधनों की कमी और जैव विविधता के नुकसान जैसी चुनौतियां बढ़ रही हैं। वहीं, लोगों को पौष्टिक और सुरक्षित भोजन उपलब्ध कराना भी बड़ी जरूरत है। इन चुनौतियों से निपटने के लिए कृषि शिक्षा और शोध को नए सिरे से तैयार करने की जरूरत है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के महानिदेशक और कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. एम.एल. जाट ने कृषि शिक्षा में वैश्विक सहयोग बढ़ाने पर जोर दिया है। डॉ. जाट ने अमेरिका के डेस मोइनेस में आयोजित 2026 नॉर्मन ई. बोरलॉग अंतर्राष्ट्रीय संवाद के दौरान वर्ल्ड फूड प्राइज फाउंडेशन के एक कार्यक्रम को ऑनलाइन संबोधित करते हुए यह बात कही। वह इस कार्यक्रम में भारतीय राष्ट्रीय कृषि विज्ञान अकादमी के अध्यक्ष के रूप में शामिल हुए।

डॉ. जाट ने कहा कि कृषि शिक्षा और शोध को बदलते समय की जरूरतों के मुताबिक तैयार करना होगा। इसके लिए केवल फसल उत्पादन पर ध्यान देना काफी नहीं है, बल्कि खेती से लेकर खाद्य प्रसंस्करण, मूल्य संवर्धन और बाजार तक पूरी खाद्य व्यवस्था को ध्यान में रखना होगा। उन्होंने कृषि विश्वविद्यालयों और उद्योगों के बीच सहयोग मजबूत करने की जरूरत बताई। इससे ऐसे कुशल पेशेवर तैयार किए जा सकेंगे, जिनके पास कृषि क्षेत्र की व्यावहारिक जरूरतों के मुताबिक काम करने की क्षमता हो।

तीन साल में मत्स्य उत्पादन 10 लाख टन करने का लक्ष्य

भोपाल। मध्यप्रदेश में अगले तीन वर्षों में मत्स्य उत्पादन बढ़ाकर 10 लाख टन करने का लक्ष्य रखा गया है। वर्तमान में प्रदेश का उत्पादन 4.45 लाख टन है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने भोपाल में आयोजित नेशनल फिशरीज इन्वेस्टर्स एंड एक्सपोर्टर्स कॉन्क्लेव-2026 में कहा कि नई एकीकृत मत्स्योद्योग नीति-2026 के माध्यम से प्रदेश में नीली क्रांति को बढ़ावा दिया जाएगा। इसके तहत एक लाख नए केज कल्चर स्थापित करने का लक्ष्य है।

डॉ. यादव ने कहा कि मत्स्य पालन को फूड प्रोसेसिंग और एमएसएमई उद्योग से जोड़कर प्रसंस्करण, पैकेजिंग, विपणन और निर्यात को प्रोत्साहित किया जाएगा। निवेशकों को भूमि, तकनीकी सहायता और अन्य सुविधाएं उपलब्ध कराई जाएंगी। जलाशयों का बहुआयामी उपयोग करते हुए मत्स्य उत्पादन के साथ जल संरक्षण और जलीय जीवों के संरक्षण पर भी जोर दिया जाएगा।

सम्मेलन में मध्यप्रदेश मत्स्य पालन निवेश एवं निर्यात मार्गदर्शिका-2026 तथा एक्सपोर्ट पोर्टल की एसओपी का विमोचन किया गया। रायसेन जिले के बारना जलाशय में पीपीपी मॉडल पर स्थापित 500 केज कल्चर का शुभारंभ हुआ। जलाशयों और अमृत सरोवरों के एकीकृत विकास की योजना को भी प्रशासनिक स्वीकृति हस्तांतरित की गई।



मुख्य सचिव अशोक बर्णवाल ने बताया कि प्रदेश में मत्स्य क्षेत्र में प्रतिवर्ष 5,000 करोड़ रुपये का निवेश बढ़ाने और 50 हजार रोजगार सृजित करने का लक्ष्य है। केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह ने कहा कि भारत का मत्स्य उत्पादन बढ़कर 198 लाख टन हो गया है और मत्स्य निर्यात 62,408 करोड़ रुपये तक पहुंच चुका है। केंद्रीय राज्यमंत्री प्रो. एसपी सिंह बघेल ने किसानों की आय बढ़ाने में मत्स्य पालन और पशुपालन की भूमिका पर जोर दिया। प्रदेश के मत्स्य विकास राज्यमंत्री नारायण सिंह पवार ने जल संसाधनों के बेहतर उपयोग से मत्स्य उद्योग के विस्तार की बात कही। सम्मेलन में देश-विदेश के निवेशकों, निर्यातकों, खरीदारों, विक्रेताओं और एफपीओ ने भाग लिया तथा व्यापार एवं निर्यात बढ़ाने पर चर्चा की।



श्री प्रमोद कुमार पाण्डेय
सीनियर जीएम (हेड एग्रोनामिस्ट)
आरएमपीसीएल, इन्दौर (म.प्र.)

महावीरा जिरोन पावर प्लस के साथ सोने पे सुहागा साबित होती लहसुन-प्याज की खेती





क्या आप इस सीजन में प्रमुख मसाला फसल लहसुन एवं प्याज की खेती से अधिकतम उत्पादन सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता के साथ लेना चाहते हैं? यदि हां तो लहसुन की बुवाई एवं प्याज की रोपाई के समय डीएपी के स्थान पर छः पौषक तत्वों से परिपूर्ण 'महावीरा जिरोन पावर प्लस' का उपयोग करें।

'महावीरा जिरोन पावर प्लस' फास्फोरस, कैल्शियम, सल्फर, जिंक, बोरोन एवं मैग्नीशियम का अद्भुत मिश्रण सिक्स इन वन खाद है जो लहसुन एवं प्याज का सर्वाधिक उत्पादन उच्च गुणवत्ता के साथ देने में सक्षम है।



बुवाई-रोपाई का समय	बुवाई के समय	प्रति एकड़ उत्पादन
20 अक्टूबर से 15 नवंबर तक	3 बैग (150किग्रा) प्रति एकड़ प्रयोग।	लहसुन-115 से 135 क्विंटल एवं प्याज-135 से 165 क्विंटल तक पायें।

फॉस्फोरस (P)16% — जड़ों एवं कंदों की वृद्धि के लिये महत्वपूर्ण है।

जिंक (Zn)0.5% — क्लोरोफिल उत्पाद में सहायक तथा प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया को बढ़ाता है।

कैल्शियम (Ca)19% — पौधों की मजबूती के साथ कन्द को लम्बे समय तक सड़ने से बचाये।

बोरॉन (B)0.2% — एक समान कन्द एवं कंद को चमकदार बनाने में सहायक तथा रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाये।

सल्फर (S)11% — कन्द में गंध एवं तीखापन पैदा करता हैं तथा एंजाइम एवं विटामिन के निर्माण में सहायक।

मैग्नीशियम (Mg)0.5% — लहसुन एवं प्याज की फसल को स्वस्थ्य एवं हरा-भरा रखे।

संतुलित पोषण = बेहतर उत्पादन = अधिक मुनाफा

Mahaveera
RMPCL The Nutrition Company

अधिक जानकारी के लिये कंपनी के कस्टमर केयर नं. 8956926412 पर संपर्क किया जा सकता है।

साप्ताहिक सुविचार

पुरूषार्थ से दरिद्रता का नाश होता है, जप से पाप दूर होता है।
– चाणक्य

रबी फसल उत्पादकता सबसे बड़ी चुनौती

कृषक दूत सम्पादकीय

रबी फसल बुवाई प्रारम्भ हो चुकी है। इस वर्ष मध्यप्रदेश में लगभग 145 लाख हेक्टेयर में रबी फसलें बोने का कार्यक्रम बनाया गया है। सबसे अधिक गेहूं की बुवाई 95 हजार हेक्टेयर के लगभग किया जाना है। पिछले साल 93 लाख हेक्टेयर में गेहूं बोया गया था। प्रदेश में रबी फसलों का यह क्षेत्र पिछले 10 वर्षों से यथावत है। किसी जमाने में चने का रकबा 35 लाख हेक्टेयर से अधिक रहता था जो अब घटकर 25 लाख हेक्टेयर तक सिमट गया है। चना उत्पादन में मध्यप्रदेश देशभर में शीर्ष पर रहता है लेकिन चना के प्रति किसानों की दिलचस्पी कम होती जा रही है। प्रदेश में उत्पादन की दृष्टि से सभी फसलों की उत्पादकता औसत राष्ट्रीय उत्पादन से काफी कम है। इस साल प्रदेश के 50 प्रति जिलों में मानसूनी बारिश कम होने से रबी उत्पादन अनिश्चितता में है। पानी की कमी से गेहूं का रकबा कम होने की उम्मीद है। दलहनी एवं तिलहनी फसलों का रकबा बढ़ सकता है। फसल उत्पादकता कम होने का प्रमुख कारण है असंतुलित उर्वरक उपयोग एवं पौषक तत्व प्रबंधन का अभाव। किसान भाई सामान्यतः फसलों में यूरिया एवं डीएपी के अलावा अन्य पौषक तत्व आधारित उर्वरकों का उपयोग नाम मात्र का करते हैं। मिट्टी परीक्षण रिपोर्ट्स बतलाती है कि प्रदेश की मिट्टी में आवश्यक पौषक तत्वो की भारी कमी है। 18 तत्वों में से मात्र दो या तीन ही दिये जाने के कारण मिट्टी की परत अत्यधिक कठोर हो गई है। इसके लिये जरूरत है मिट्टी को पुनर्जीवन प्रदान करने की। संतुलित उर्वरक, मिट्टी परीक्षण के आधार पर एवं आवश्यक पौषक तत्वों का दिया जाना जरूरी है। फसलों का उत्पादन बढ़ाने से ही किसानों की आमदनी बढ़ सकती है। उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग एवं खेती में प्रयोग किये जाने वाले नवाचार से उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। फसल उत्पादन बढ़ाने के लिये किसानों को उन्नत तकनीकी का प्रशिक्षण दिया जाना अत्यंत आवश्यक है। खेती में फसल विविधिकरण एवं नकदी फसलों को प्रोत्साहित किये जाने की आवश्यकता है। खेती के साथ उद्यानिकी, पशुपालन, मछलीपालन, रेशमपालन, कुक्कुटपालन इत्यादि किसानों को आर्थिक उन्नति की राह दिखा सकते हैं। खेती में उत्पादन लागत निरंतर बढ़ने से किसानो को खेती से घाटा हो रहा है। फसलों का उत्पादन बढ़ने से यह घाटा कम हो सकता है। समय पर बुवाई एवं अन्य कृषि कार्यों का बेहतर प्रबंधन करके खेती से उत्पादन बढ़ाना जाना चाहिये।

पेट्रोकेमिकल्स, फर्टिलाइजर्स निवेशकों को सुविधा देगी सरकार: डॉ. यादव

भोपाल। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वर्ष 2040 तक रसायन एवं उर्वरक से जुड़े वाणिज्यिक व्यवसायों का टर्न ओवर 1 ट्रिलियन डॉलर तक ले जाने का संकल्प देश के सामने रखा है। इस संकल्प लक्ष्य की पूर्ति के लिए देश की सभी राज्य सरकारें स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ केन्द्र सरकार के साथ तेजी से कदमताल कर रही हैं। उन्होंने कहा कि पेट्रोकेमिकल्स, पेट्रो पालिमर्स, फर्टिलाइजर्स, विभिन्न प्रकार के रसायनों एवं दवाओं के निर्माण के लिए मध्यप्रदेश में अनेक अवसर उपलब्ध हैं। हमने मप्र में निवेश के लिए एक बेहद आसान, सरलीकृत एवं पारदर्शी व्यवस्था स्थापित की है। मुख्यमंत्री डॉ.



यादव ने मुंबई के बॉम्बे एग्जीबिशन सेंटर में तीन दिवसीय इंडिया केम 2026 सत्र को संबोधित करते हुए यह बातें कही।

डॉ. यादव ने कहा कि रसायन एवं उर्वरक क्षेत्र में निवेश के इच्छुक सभी निवेशकों को हम पूरी सुविधा, साथ, सहयोग, सुरक्षा देकर हर जरूरी मदद करने के लिए भी पूरी तरह तैयार हैं। निवेशक बिना किसी संकोच के मप्र में निवेश करें और यहां के अवसरों एवं उद्योग अनूकूल नीतियों का भरपूर लाभ उठाएं। उन्होंने मध्यप्रदेश को रसायन एवं पेट्रोकेमिकल उद्योग के प्रमुख ग्लोबल हब के रूप में स्थापित करने के राज्य सरकार के संकल्प को दोहराया। डॉ. यादव ने यूपीएल, पीआई इंडस्ट्रीज, धनुका और सिंजेंटा जैसी कंपनियों से मध्यप्रदेश को केवल बाजार नहीं, विनिर्माण के लिए भी चुनने का आग्रह किया। वैश्विक कंपनियों में बीएएसएफ, डाऊ, आर्केमा, लैनक्सेस और मित्सुबिशी केमिकल से उन्होंने फ्यूचर ग्रोथ केके 1 स्ट्रेटेजी अंतर्गत मध्यप्रदेश की संभावनाओं पर गहनता से आंकलन करने का आग्रह किया।

चालू रबी के लिये बीज विक्रय दरें घोषित

भोपाल। राज्य शासन द्वारा रबी वर्ष 2025-26 में उत्पादित फसलों हेतु कृषकों के लिये उपार्जन दरें तथा रबी विपणन वर्ष 2026-27 हेतु रबी फसलों के प्रमाणित बीजों की विक्रय दरें घोषित की गई हैं। जो निम्नानुसार है।

फसल का नाम	विक्रय दर समिति द्वारा अनुमोदित दरें (रु. प्रति क्विंटल)	
	कृषकों के लिए उपार्जन दरें (प्रीमियम सहित)	संस्था की सकल विक्रय दर तथा कृषकों को प्राप्त होने वाले बीज की अंतिम दर (बीज वितरण अनुदान अलग से देय होगा)
प्रमाणित बीज की दरें		
गेहूँ ऊँची जाति (10 वर्ष तक की अवधि)	2900	4520
गेहूँ ऊँची जाति (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	2900	4520
गेहूँ बौनी जाति (10 वर्ष तक की अवधि)	2750	4370
गेहूँ बौनी जाति (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	2750	4370
चना (10 वर्ष तक की अवधि)	6100	8840
चना (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	6100	8840
चना काबूली (10 वर्ष तक की अवधि)	6570	9320
चना काबूली (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	6570	9320
मटर (10 वर्ष तक की अवधि)	4100	5960
मटर (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	4100	5960
मटर अर्किल (10 वर्ष तक की अवधि)	4200	6060
मटर अर्किल (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	4200	6060
मसूर (10 वर्ष तक की अवधि)	7100	9870
मसूर (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	7100	9870
सरसों (15 वर्ष तक की अवधि)	6650	9400
सरसों (15 वर्ष से अधिक की अवधि)	6650	9400
अलसी (15 वर्ष तक की अवधि)	7100	9870
अलसी (15 वर्ष से अधिक की अवधि)	7100	9870
जौ (10 वर्ष तक की अवधि)	2350	4100
जौ (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	2350	4100
मूंग ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष तक की अवधि)	9000	11820
मूंग ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	9000	11820
उड़द ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष तक की अवधि)	8400	11200
उड़द ग्रीष्मकालीन (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	8400	11200
जैविक बीज की दरें		
गेहूँ (10 वर्ष तक की अवधि)	3000	4630
गेहूँ (10 वर्ष से अधिक की अवधि)	3000	4630

आधार बीज की उपार्जन दर प्रमाणित बीज हेतु निर्धारित उपार्जन तथा विक्रय दरों से खाद्यान्न फसलों हेतु 2 प्रतिशत तथा दलहन/तिलहन हेतु 3 प्रतिशत अधिक होगा। उक्त दरों का निर्धारण बीज निगम द्वारा अपने स्तर से उक्तानुसार किया जावेगा। बीज निगम के पास उपलब्ध सत्यरूप बीज की विक्रय दर शासन द्वारा निर्धारित प्रमाणित बीज से 20 प्रतिशत तक कम रहेगी। उक्त दरों का निर्धारण बीज निगम द्वारा अपने स्तर से उक्तानुसार किया जावेगा।

रबी 26-27 कार्यक्रम निर्धारण बैठकें शुरू

भोपाल-इंदौर, उज्जैन संभाग को छोड़कर बांकी संभागीय बैठकें होंगी ऑनलाइन

(विशेष प्रतिनिधि)

भोपाल। रबी फसल वर्ष 2026-27 की तैयारी एवं खरीफ 2026 की समीक्षा हेतु संभागीय बैठकें शुरू हो गई हैं। पहली बैठक इंदौर संभाग की 22 अक्टूबर को इंदौर में आयोजित की गई। कृषि उत्पादन आयुक्त मध्यप्रदेश की अध्यक्षता में होने वाली इन बैठकों में किसान कल्याण विभाग, उद्यानिकी विभाग, सहकारिता, खाद्य प्रसंस्करण, पशुपालन, डेयरी विकास, मछुआ कल्याण एवं मत्स्य विकास विभाग के कार्यक्रमों पर विशेष चर्चा एवं समीक्षा की जा रही है। अल्प वर्षा से प्रभावित जिलों के लिये विशेष कार्ययोजना बैठकों में प्रस्तुत की जा रही है। उज्जैन संभाग की बैठक उज्जैन में 28 अक्टूबर को होगी। भोपाल एवं नर्मदापुरम संभाग की 29 अक्टूबर को भोपाल में होगी। शेष संभाग की बैठकें ऑनलाइन वीडियो कॉन्फ्रसिंग के माध्यम से होगी जो निम्नानुसार कार्यक्रम है।

संभाग	बैठक तारीख	स्थान
उज्जैन	28.10.2026	उज्जैन
भोपाल एवं नर्मदपुरम	29.10.2026	भोपाल
जबलपुर	16.11.2026	ऑनलाइन
ग्वालियर एवं चंबल संभाग	17.11.2026	ऑनलाइन
रीवा एवं शहडोल सागर	18.11.2026 23.11.2026	ऑनलाइन ऑनलाइन

अनमोल वचन

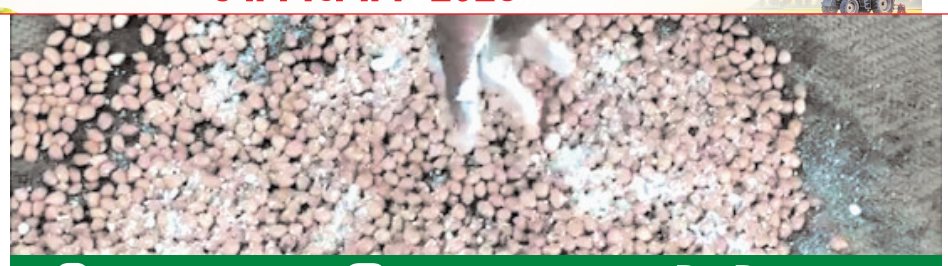
सूर्य आकाश में छुप कर नहीं विचर सकता। महापुरुष भी संसार में गुप्त नहीं रह सकते।
– व्यास

पाक्षिक व्रत एवं त्यौहार

कार्तिक कृष्ण विक्रम संवत 2083 ईस्वी सन् 2026

दिनांक	दिन	तिथि	व्रत/ त्यौहार
27 अक्टूबर 26	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण 1/2	
28 अक्टूबर 26	बुधवार	कार्तिक कृष्ण 3	
29 अक्टूबर 26	गुरुवार	कार्तिक कृष्ण 4	करवा चौथ
30 अक्टूबर 26	शुक्रवार	कार्तिक कृष्ण 5	
31 अक्टूबर 26	शनिवार	कार्तिक कृष्ण 6	
01 नवम्बर 26	रविवार	कार्तिक कृष्ण 7	
02 नवम्बर 26	सोमवार	कार्तिक कृष्ण 8	
03 नवम्बर 26	मंगलवार	कार्तिक कृष्ण 9	
04 नवम्बर 26	बुधवार	कार्तिक कृष्ण 10	
05 नवम्बर 26	गुरुवार	कार्तिक कृष्ण 11	रमा एकादशी
06 नवम्बर 26	शुक्रवार	कार्तिक कृष्ण 12	धनतेरस, प्रदोष व्रत
07 नवम्बर 26	शनिवार	कार्तिक कृष्ण 13	शिव चतुर्दशी (छोटी दीवाली)
08 नवम्बर 26	रविवार	कार्तिक कृष्ण 14	दीवाली
09 नवम्बर 26	सोमवार	कार्तिक कृष्ण 30	अन्नकूट, अमावस्या

● डॉ. शुभम मिश्रा
फैकल्टी ऑफ एग्रीकल्चर
उच्च शिक्षा उत्कृष्टता संस्थान
भोपाल (म.प्र.)



बीज उपचारित चना- बोले घना

चने का उत्पादन कुल दलहन फसलों के उत्पादन का लगभग 45 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में चने की खेती लगभग 38 लाख हेक्टेयर में की जाती है। किसानों द्वारा उन्नत तकनीक न अपनाने से उत्पादन काफी कम मिलता है। चने की खेती के लिए जल निकास वाली उपजाऊ भूमि का चयन करना चाहिए। इसकी खेती हल्की व भारी दोनों प्रकार की भूमि में की जा सकती है।

विश्व के कुल चना उत्पादन का 70 प्रतिशत भारत में होता है। देश में कुल उगायी जाने वाली दलहन फसलों का उत्पादन लगभग 17.00 मिलियन टन प्रति वर्ष होता है। चने का उत्पादन कुल दलहन फसलों के उत्पादन का लगभग 45 प्रतिशत है। मध्यप्रदेश में चने की खेती लगभग 38 लाख हेक्टेयर में की जाती है। किसानों द्वारा उन्नत तकनीक न अपनाने से उत्पादन काफी कम मिलता है।

चने की खेती के लिए जल निकास वाली उपजाऊ भूमि का चयन करना चाहिए। इसकी खेती हल्की व भारी दोनों प्रकार की भूमि में की जा सकती है। मानसून के अंत में व बुवाई से पहले अधिक गहरी जुताई न करें। खेत की जुताई करके नमी संरक्षण के लिये पाटा चलायें।

बुवाई विधि : चने की बुवाई कतारों में करें। 7 से 10 सेमी गहराई पर बीज बोना चाहिये। देशी चने के लिये कतार से कतार की दूरी 30 सेमी एवं काबुली चने को 45 सेमी दूर बोना चाहिये।

बुवाई का समय : चने की बुवाई में समय का ध्यान अवश्य रखें। अक्टूबर के शुरू से नवम्बर प्रथम सप्ताह तक का समय बोनी के लिये सर्वाधिक उपयुक्त होता है।

चने की उन्नत किस्में

उन्नत किस्म	पकने की अवधि	औसत पैदावार (क्विं./हे.)
जवाहर चना-74	110-115	15-18
जेजी-11	100-110	15-18
जेजी-130	110-115	18-20
विशाल	110-115	20-25
जेजी-6	110-115	20-21
जवाहर चना-218	115-120	15-20
विजय	115-120	12-15
आरव्हीजी-201	100-105	20-25
आरव्हीजी-202	100-105	18-20
जवाहर चना-11	115-125	15-20
जवाहर चना-130	97-105	15-20
जवाहर चना-16	110-115	15-20
जवाहर चना-315	115	15-20
जेजी-14	100-105	22-25
जाकी-9218	100-110	18-20
गुलाबी		
जेजीजी-1	120-125	14-16
काबुली		
जेजीके-1	90-110	18-19
जेजीके-2	100-110	18-20
आरव्हीएसजीकेजी-102	95-104	12-15

बीज की मात्रा

देसी किस्मों के लिए 80-90 किलो बीज प्रति हेक्टेयर डालें और 100 किलो बीज प्रति हेक्टेयर काबुली किस्मों के लिए डालें।

उर्वरकों का प्रयोग

मिट्टी की जांच के हिसाब से ही उर्वरक का प्रयोग करना चाहिए। असिंचित क्षेत्रों में 10 किलो नाइट्रोजन और 25 किलो फास्फोरस और सिंचित क्षेत्र में बुवाई से पहले 20 किलो नाइट्रोजन और 40 फास्फोरस प्रति हेक्टेयर सीड ड्रिल के माध्यम से आखिरी जुताई के समय डालना चाहिए।

अत्यधिक जरूरी बीजोपचार

जड़ गलन व उकटा रोग की रोकथाम के लिए कार्बेन्डाजिम 0.75 ग्राम और थाइरम एक ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें। जहां पर दीमक का प्रकोप हो वहां 100 किलो बीज में 800 मिली लीटर क्लोरोपायरीफॉस 20 ईसी मिलाकर बीज को उपचारित करें। बीजों को राइजोबिया कल्चर और पीएसबी कल्चर से उपचार करने के बाद ही बोयें। एक हेक्टेयर क्षेत्र के बीजों को उपचारित करने के लिए तीन पैकेट कल्चर पर्याप्त होता है। बीज उपचार करने के लिए आवश्यकतानुसार पानी गर्म करके गुड़ घोलें। इस गुड़ पानी के घोल को ठंडा करने के बाद कल्चर को इसमें अच्छी तरह मिलाएं। इसके बाद कल्चर मिले घोल से बीजों को उपचारित करें और छाया में सुखाने के बाद जल्दी ही बुवाई करें। सबसे पहले कवकनाशी, फिर कीटनाशी और इसके बाद राइजोबियम कल्चर से बीजोपचार करें। बीज जनित रोगों से बचाने हेतु ट्राइकोडरमा 2.5 किलो प्रति एकड़, सड़ा हुआ गोबर 50 किलो मिलाएं और फिर जूट की बोरियों से ढंक दें। फिर इस घोल को नमी वाली जमीन पर बिजाई से पहले मिला दें।

(शेष पृष्ठ 16 पर)





- **मनोज कुमार तरवरिया**
  सहायक प्राध्यापक (सस्य विज्ञान)
  आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर
- **जी.एस. गाठिये ● देवेंद्र पयासी**
  वरिष्ठ वैज्ञानिक अखिल भारतीय समन्वित सोयाबीन अनुसंधान परियोजना,
  आर.ए.के. कृषि महाविद्यालय, सीहोर
- **मधुर कुमार तरवरिया**
  बी.एम. कृषि महाविद्यालय
  खण्डवा (म.प्र.)



उन्नत तकनीक से बोयें चना

चना, विश्व में रबी मौसम में उगायी जाने वाली तीसरी सबसे महत्वपूर्ण दलहनी फसल है। इसको दालों का राजा भी कहा जाता है। आज बदलते जलवायु परिदृश्य, बढ़ती जनसंख्या और कृषि में आधुनिक तकनीकों के समावेश के कारण अब चना फसल का वैज्ञानिक प्रबंधन पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है।

भारत में मध्यप्रदेश, राजस्थान, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, महाराष्ट्र और पंजाब आदि मुख्य चना उत्पादक राज्य हैं। भारत में चने का सबसे अधिक उत्पादन मध्यप्रदेश में होता है। इन सभी राज्यों में देशी एवं काबुली दोनों ही प्रकार की प्रजातियों की खेती की जाती है। चने की उत्पादकता बढ़ाने के लिये उन्नत किस्मों, समय पर बुवाई, राइजोबियम से बीजोपचार, समुचित उर्वरता प्रबंधन, कीटनाशी प्रबंधन और आवश्यकतानुसार हल्की सिंचाई से उत्पादकता में दोगुनी वृद्धि लायी जा सकती है।

चने की प्रमुख उन्नत किस्में

किस्म का नाम	पकने की अवधि	पैदावार (क्विं/हे.	विशेषतायें
आरवीजी-202	115-120	22-25	पाले से होने वाले नुकसान के प्रति अधिक प्रतिरोधी मानी जाता है जो मध्य प्रदेश के वैज्ञानिकों द्वारा विकसित की गई है और यह किस्म सूखी जड़ सड़न, कॉलर सड़न और मुरझाने (विल्ट) जैसी बीमारियों के प्रति भी प्रतिरोधी है।
आरवीजी-204	115-120	18-22	यह चने देशी किस्मों है जो की हार्वेस्टर से काटी जा सकती है, जिससे किसानों की लागत कम होती है और यह किस्म उक्ठा रोग के प्रति प्रतिरोधी है।
जे.जी.-130	105-115	18-20	मध्यम ऊँचाई, सीधे पौधे, एक फली, उकठा रोग, सहन शक्ति, अधिक उपज, मोटे दाने
पूसा मानव	110.115	22 .25	इस किस्म को मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड क्षेत्र, महाराष्ट्र, गुजरात, राजस्थान के कुछ भागों में बुवाई के लिए उपयुक्त है।
पूसा समृद्धि	110-115	20-22	यह किस्म उकठा रोग के प्रति प्रतिरोधी है। यह किस्म सूखा और जल की कमी को सहन करने में सक्षम है। इसके भूरे और बड़े आकार के बीज होते हैं।
पूसा विजय	105-110	18-20	जल्दी एवं देरी से दोनों समय में बोई जा सकती है। सिंचित क्षेत्र में इसकी फसल 105 दिन और असिंचित क्षेत्र में इसकी फसल 90 तैयार हो जाती है।
फुले विक्रम	110-115	22-25	चने की एक उच्च-उपज देने वाली किस्म है। यह सूखा सहन करने वाली और उच्च प्रोटीन स्तर वाली एक उन्नत किस्म है, उपयुक्त क्षेत्र- मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, गुजरात, बुंदेलखंड (उत्तर प्रदेश), राजस्थान के कुछ भाग।
आर.एस.जी.-974	125-130	20-25	यह किस्म पिछेती एवं बारानी खेती हेतु उपयुक्त है। इसके पौधे मध्यम ऊंचाई वाले तथा शाखाएं (अभिलाषा)बैंगनी रंग की धारियायुक्त होती हैं। पत्तियों का रंग गहरा हरा तथा फूल बैंगनी लाल होते हैं। यह किस्म उक्ठा, जड़ गलन एवं बी.जी.एम. रोगों हेतु प्रतिरोधी क्षमता रखती है। साथ ही यह पाला सहन करने की क्षमता भी रखती है।

भूमि का चयन एवं उसकी तैयारी

चने के लिए भूमि तैयार करने में अधिक परिश्रम नहीं करना पड़ता है। इसकी खेती के लिए हल्की दोमट या दोमट मिट्टी अच्छी होती है। भूमि का चुनाव करते समय यह अवश्य ध्यान दें कि उस भूमि में पानी का जमाव न हो तथा अधिक वर्षा की स्थिति में जल निकास की उचित व्यवस्था हो। भूमि में अधिक क्षारीयता नहीं होनी चाहिये। पहली जुताई मिट्टी पलटने वाले हल से या डिस्क हैरो से करनी चाहिये। तथा बाद की दो जुताई देशी हल अथवा कल्टीवेटर से करनी चाहिए। चना ढेलेदार खेत को पसंद करता है।

जलवायु : चना रबी मौसम की दलहन फसल है। चने की अच्छी वृद्धि एवं पैदावार के लिए बुआई से लेकर कटाई तक 30 से 15 डिग्री सेल्सियस तापमान अच्छा माना जाता है।

मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि: चना एक दलहनी फसल है, जिसकी की जड़ों में राइजोबियम नामक जीवाणु वायुमंडलीय नाइट्रोजन को स्थिर करते हैं। इससे मिट्टी में प्राकृतिक रूप से नाइट्रोजन की मात्रा बढ़ती है और अगली फसल के लिए मिट्टी उर्वर होती है। जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को मिट्टी में स्थिर करते हैं, जिससे भूमि की प्राकृतिक उर्वरता बढ़ती है।

फसल चक्र में विविधता: चना को गेहूं, सरसों, जौ आदि रबी फसलों के साथ रोटेशन में बोया जा सकता है, जिससे भूमि का बेहतर उपयोग होता है और जिससे रोग और कीटों का प्रकोप कम होता है। यह मिश्रित खेती और अंतरफसल प्रणाली के लिए भी उपयुक्त है।

कम लागत वाली फसल: चना की खेती में सिंचाई, उर्वरक और कीटनाशकों की आवश्यकता कम होती है, जिससे यह कम लागत में अधिक लाभ देने वाली फसल बनती है। सूखा सहनशीलता की वजह से यह वर्षा आधारित क्षेत्रों में भी सफलतापूर्वक उगाई जाती है।

सूखा प्रतिरोधक क्षमता: यह फसल कम वर्षा वाले क्षेत्रों में भी उगाई जा सकती है, जिससे यह जल-संरक्षण में सहायक होती है।

किसानों की आय का स्रोत: अच्छी उपज और बाजार में मांग होने के कारण यह किसानों की आय बढ़ाने में सहायक है।

उन्नत किस्मों का चयन: किसी भी फसल का उत्पादन स्तर कई कारकों पर निर्भर होता, जिसमें उपयुक्त किस्म का चुनाव मुख्य है। फसल की किस्म के चुनाव करते समय तापमान, मिट्टी का प्रकार, उसकी जलधारण क्षमता, नमी की उपलब्धता एवं वर्षा की मात्रा आदि ध्यान में रखना चाहिए। हमारे देश में चने के दोनों प्रकार की खेती की जाती है जिसमें देशी चना मुख्यत: उगाया जाता है। काबुली या सफेद चने की खेती बहुत कम क्षेत्रफल में की जाती है क्योंकि इसमें रोग-व्याधियों की समस्या अपेक्षाकृत अधिक होती है जिसके कारण उत्पादन लागत में वृद्धि हो जाती है और उपज कम मिलती है।

बीज उपचार

चने में अनेक प्रकार के कीट एवं बीमारियां हानि पहुंचाते हैं। इनके प्रकोप से फसल को बचाने के लिए बीज को उपचारित करके ही बुवाई करनी चाहिये। बीज को उपचारित करते समय ध्यान रखना चाहिये कि सर्वप्रथम उसे फफूंदनाशी, कीटनाशी तथा अन्त में राजोबियम कल्चर सें उपचारित करें। जड़ गलन व उक्ठा रोग की रोकथाम के लिए बीज को कार्बेन्डाजिम या मैन्कोजेब या थाइरम की 1.5 से 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. बीज दर से उपचारित करें। दीमक एवं अन्य भूमिगत कीटों की रोकथाम हेतु क्लोरोपाइरीफोस 20 ईसी या एन्डोसल्फॉन 35 ईसी की 8 मिलीलीटर मात्रा प्रति किलो बीज दर से उपचारित करके बुवाई करनी चाहिये। अन्त में बीज को राइजोबियम कल्चर के तीन एवं फास्फोरस घुलनशील जीवाणु के तीन पैकेटों द्वारा एक हेक्टेयर क्षेत्र के लिए आवश्यक बीज की मात्रा को उपचारित कर बुवाई करें। उपचारित बीज को छाया में सूखाकर बुवाई करना चाहिये।

▸ जड़ गलन व उक्ठा रोग की रोकथाम के लिये कार्बेण्डेजिम दो ग्राम प्रति किलो बीज की दर से बीज को उपचारित करें। यह उपचार तीन चार सप्ताह तक प्रभावी रहता है। ▸ जिन क्षेत्रों में दीमक का प्रकोप हो वहां 100 किलो बीज में 400 मिलीलीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ईसी मिलाकर बीज को उपचारित करें। ▸ कटवर्म प्रभावित क्षेत्रों में बीज को 10 मिलीलीटर क्यूनालफॉस 25 ईसी प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर उपचारित करने के बाद बोयें।

रोग नियंत्रण हेतु: उक्ठा एवं जड़ सड़न रोग से फसल के बचाव हेतु 2 ग्राम थायरम+1 ग्राम कार्बेडाजिम के मिश्रण से प्रति किलो बीज या वीटावैक्स (कार्बोक्सिन) 2 ग्राम प्रति किलो से उपचारित करें। कीट नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्सम 70 डब्ल्यू.पी. 3 ग्राम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करें।

(शेष पृष्ठ 16 पर)



● डॉ. आशीष कुमार त्रिपाठी
वैज्ञानिक, पादप रोग विज्ञान
कृषि विज्ञान केन्द्र, सागर-।।,
देवरी (म.प्र.)



मसूर की खेती फायदा अधिक देती

मसूर का दलहनी फसलों में विशेष स्थान है। वारानी क्षेत्रों में अधिकतर दलहनी फसलों के रूप में मसूर की खेती की जाती है। मसूर में 24.2 प्रतिशत प्रोटीन व कैल्शियम प्रचुर मात्रा में होता है।

मसूर का भूसा अत्यन्त पौष्टिक होता है व जानवर इसे चाव से खाते हैं। इससे दूध की मात्रा बढ़ती है। देश में प्रमुख मसूर उत्पादक राज्य उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, आसाम, बिहार, राजस्थान व पश्चिम बंगाल है। कम उत्पादकता के प्रमुख कारणों में सूखा व उक्ठा रोग प्रतिरोधी किस्मों का कम प्रचलन, अधिक उत्पादन व वोल्ड दाना वाली किस्मों का अभाव, कम उपजाऊ भूमि में मसूर की खेती आदि है जिससे उत्पादन पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

उपयुक्त भूमि

मसूर की फसल सभी प्रकार की मिट्टियों में की जा सकती है किन्तु मध्यम से मटियार दोमट मिट्टी इसके लिये उपयुक्त है। बुवाई के समय, हल्की जुताई कर खेत को समतल कर बीज की बुवाई कर खेत में पाटा लगाया जाता है ताकि नमी लम्बे समय तक खेत में बनी रहे।

बुवाई का समय व बीज की मात्रा

वारानी क्षेत्रों में अर्थात् असिंचित क्षेत्रों में बुवाई 25 सितम्बर से 15 अक्टूबर के बीच तथा सिंचाई सुविधा होने पर 15 अक्टूबर से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है। समय से बोनी करने पर 40 कि.ग्रा. बीज व देर से बुवाई करने पर 50 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर उपयोग करना चाहिये। कतार से कतार की दूरी 20-25 से.मी. व पौधे से पौधे की दूरी 2-3 से.मी. रखनी चाहिये। बोने से पूर्व बीज को कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन-थायरम की 2 ग्राम मात्रा या ट्राइकोडर्मा विरिडी 10 ग्राम प्रति कि.ग्रा. बीज की दर से उपचारित करना चाहिये। उपचारित बीज को राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर से निवेशित (उपचारित) करना चाहिए। इस हेतु कल्चर की 8-10 ग्राम प्रति किग्रा. बीज के मान से उपयोग करना चाहिए।

उन्नत प्रजातियां

अच्छे उत्पादन के लिये आवश्यक है कि बीज शुद्ध हो और उसका अंकुरण प्रतिशत मानक स्तर से कम न हो। स्वस्थ, सुडौल व प्रमाणित बीज जिसका अंकुरण 70 प्रतिशत हो बोने हेतु उपयोग करना चाहिऐ। मसूर की उन्नत प्रजातियां- जे.एल.3, एल 4717, एल 4727, एल 4729, आई.पी.एल. 316, आई.पी.एल. 81, आई.पी.एल. 547, आर व्ही एल 11-6, आर व्ही एल 31, कोटा मसूर -3, कोटा मसूर -4, के. 75 (मलिका) आदि का उपयोग करें।

पोषक तत्व प्रबंधन

दलहनी फसल होने के कारण मसूर की पोषक तत्व मांग कम रहती है। मसूर की फसल हेतु 20 कि.ग्रा. नत्रजन, 50 कि.ग्रा. फास्फोरस, 20 कि.ग्रा. पोटाश व 20 कि.ग्रा. सल्फर प्रति हेक्टेयर देना आवश्यक है। वारानी क्षेत्रों में जहाँ वर्षा ऋतु की नमी में मसूर की बुवाई की जाती है वहां 10-15 कि.ग्रा. नत्रजन, 20-25 कि.ग्रा. फास्फोरस प्रति हेक्टेयर के मान से उपयोग करना चाहिये। जिन क्षेत्रों में पलेवा लगाकर बुवाई की जाती हैं वहाँ 15:30:10 के अनुपात में नत्रजन, फास्फोरस व पोटाश देना चाहिये एवं जहां पर सिंचाई की सुविधा हो वहां उर्वरकों की पूरी मात्रा उपयोग करना चाहिये।

उर्वरकों के उपयोग के साथ-साथ जैव उर्वरकों (राइजोवियम व पी.एस.बी.) का उपयोग भी आवश्यक है ताकि राइजोबियम द्वारा जड़ों में ग्रंथीकरण ठीक से हो सके व पी.एस.वी. द्वारा भूमि की अनुपलब्ध फॉस्फोरस पौधों को उपलब्ध करायी जा सके।

खरपतवार व सिंचाई प्रबंधन: मसूर की फसल हेतु अधिक मात्रा में नमी की आवश्यकता नहीं होती है परन्तु फली अवस्था पर सिंचाई करने से उत्पादन पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। मसूर की फसल व खरपतवारों की प्रतिस्पर्धा अवधि 40-45 दिन है अत: बुवाई से 40-50 दिनों तक खरपतवार नियंत्रण हेतु निंदाई करें।

मसूर के साथ अंतरवर्तीय खेती

शरद ऋतु में बोये जाने वाले गन्ने के साथ 2:2 अनुपात में मसूर की फसल लेकर करीब 6-8 क्विंटल उत्पादन लिया जा सकता है इससे गन्ने की फसल पर कोई विपरीत प्रभाव नहीं पड़ता। मसूर-सरसों (8:2) अंतरवर्तीय फसल पद्धति अपनानें से मसूर में लगने वाले माहु कीट का प्रकोप कम होता है।

पौध संरक्षण

मसूर की फसल की कम उत्पादकता का एक प्रमुख कारण इसमें लगने वाला उक्ठा रोग व मांहू कीट का प्रकोप है अत: समय पर इनका नियंत्रण कर उत्पादन में 30-40 प्रतिशत तक बढोत्तरी की जा सकती है। उक्ठा, फफूंदजनित रोग है व इससे मसूर की उपज में 30 प्रतिशत तक की कमी देखी गयी है। रोग प्रकोप से पूरा पौधा, फूल अवस्था के बाद सूख जाता है। रोग से बचाव हेतु उपयुक्त फसल चक्र अपनाये, उक्ठा अवरोधी जातियों की बुवाई करें व बुवाई पूर्व बीज कार्बेन्डाजिम या पूर्व मिश्रित फफूंदनाशक कार्बोक्सिन +थायरम की 2 ग्राम मात्रा द्वारा प्रति कि.ग्रा. के मान से उपचारित कर बोयें। ट्राईकोडरमा अथवा माईकोराइजा की 1 से 2 किलोग्राम मात्रा को 1 क्विंटल नमी वाली गोबर की खाद में मिलाकर, छाया वाली जगह में 10 से 15 दिन तक पॉलीथीन शीट से ढककर रख दें। हर तीसरे दिन इस मिश्रण को पलटते रहना चाहिए ताकि ट्राईकोडरमा अथवा माईकोराइजा सुचारू रूप से पनप सके। इस तरह यह मिश्रण (एक क्विंटल) एक एकड़ भूमि में बिखेर कर मिट्टी में मिला दें।

मसूर की फसल में मुख्यत

मांहू कीट का प्रकोप होता है जो फसल की 45-50 दिन की अवस्था से रस चूसता है जिससे पौधे कमजोर व काले पड़कर सूख जाते हैं तथा उत्पादन में कभी-कभी शत प्रतिशत तक कमी आती है। इस कीट के नियंत्रण हेतु इमिडाक्लोप्रिड अथवा एसिटामिपिड अथवा पूर्व मिश्रित कीटनाशी एसिटामीप्रिड-वाईफेनथ्रिन की 100 ग्राम मात्रा को 150 लीटर पानी में मिलाकर प्रति एकड़ के मान से छिड़काव करें।

कटाई एवं मड़ाई

जब मसूर के पौधों की पत्तियां पीली पड़कर गिरने लगें तब कटाई करना चाहिये। सूखी फसल की मड़ाई कर दानों को सुखाकर 10-12 प्रतिशत नमी पर भण्डारित करना चाहिये।

उपज

वारानी क्षेत्रों में 10-12 क्विंटल व सिंचाई करने पर 18-20 क्विंटल मसूर की उपज प्रति हेक्टेयर प्राप्त होती है। मसूर की फसल की बारानी क्षेत्रों लागत लगभग 15000 रुपये प्रति हेक्टेयर व लाभ 35,000 रुपये तथा सिंचाई वाले क्षेत्रों में लागत 20000 रुपये व लाभ 65,000 रुपये प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है।



- **श्री सुनील केथवास,** प्रक्षेत्र प्रबंधक
- **रंजीत सिंह राघव,** वैज्ञानिक (मृदा विज्ञान)
- **डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी,** वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
- **डॉ. स्वप्निल दुबे,** वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख

कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)



रबी की उन्नत किस्मो से पाएं ज्यादा उत्पादन

फसलों की उत्पादकता बढ़ाने के लिए कृषक अपनी कम से कम उपलब्ध भूमि में अधिक से अधिक उत्पादन लेना चाहते हैं। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि फसल व किस्मों का चुनाव भूमि के अनुरूप, जलवायु, मौसम एवं अन्य उपलब्ध संसाधनों के आधार पर करना चाहिए।

फसलों की किस्मों का चुनाव करते समय भूमि का प्रकार, क्षेत्र विशेष की जलवायु, बुवाई का समय, पानी की उपलब्धता, क्षेत्र विषेष में कीट व्याधि व रोग का प्रकोप व आगामी मौसम में बोये जाने वाली प्रस्तावित फसलों के आधार पर करना चाहिए। जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर, राजमाता विजयाराजे सिंधिया कृषि विश्वविद्यालय, ग्वालियर, क्षेत्रीय गेहूं अनुसंधान केन्द्र, इन्दौर के वैज्ञानिकों द्वारा रबी फसलों की सिंचित, असिंचित, जल्दी, मध्यम, देर से पकने वाली प्रजाति विकसित की गयी हैं। उन्नतशील प्रजातियों का चयन करके कृषक 15-20 प्रतिशत तक उत्पादन में वृद्धि कर सकते

चंदौसी/चपाती गेहूं की किस्में

किस्म	पकने की अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
एच.आई.-1605 (पूसा उजाला)	115-120	35-40
एच.आई.-1650 (पूसा ओजस्वी)	115-120	50-55
एच.आई.-1655 (पूसा हर्षा)	115-120	40-45
एच.आई.-1633 (पूसा वाणी)	100-105	40-45
जी.डब्ल्यू.-513	110-120	55-60
जी.डब्ल्यू.-547	110-115	60-65
एच.आई.-1634 (पूसा अहिल्या)	110-115	48-50
एच.आई.-1636 (पूसा बकुला)	120-122	50-60
डी.बी.डब्ल्यू.-303 (करण बैष्णवी)	120-125	70-75
डी.बी.डब्ल्यू.-187 (करण वंदना)	120-125	70-75

कठिया/डयूरम गेहूं की किस्में

किस्म	पकने की अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
एच.आई.-8830 (पूसा कीर्ति)	115-118	40-45
एच.आई.-8663 (पोषण)	120-125	50-60
एच.आई.-8713 (पूसा मंगल)	120-125	50-60
एच.आई.-8737 (पूसा अनमोल)	120-125	50-60
एच.आई.-8759 (पूसा तेजस)	120-125	65-70
एच.आई.-8823 (पूसा प्रभात)	120-125	65-70

चने की उन्नतशील किस्में



प्रजाति	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
पूसा मानव	108-110	38-40
पूसा पार्वती	110-113	20-25
आई.पी.सी. 2006-77	110-112	20-22
जे.जी.-12	110-120	20-22
जे.जी.-18	115-120	20-25
जे.जी.-24	115-120	20-22
जे.जी.-36	115-120	20-22
जे.जी.-52	115-120	18-22
जे.जी.-63	110-120	20-22
आर.व्ही.जी.-201	95-110	20-22
आर.व्ही.जी.-202	100-105	18-20
आर.व्ही.जी.-203	100-105	18-20
आर.व्ही.जी.-204	110-112	18-20

मसूर की उन्नतशील किस्में

प्रजाति	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
आई.पी.एल.-316	110-115	14-15
आई.पी.एल.-319	110-115	15-17
आई.पी.एल.-534	100-107	14-16
आर.व्ही.एल.-30	105-110	14-15
आर.व्ही.एल. 13-5	103-109	12-14
आर.व्ही.एल. 13-7	99-103	14-15
आर.व्ही.एल.-31	105-110	14-15
एल.-4727	92-118	11-15
एल.-4717	96-106	12-13
एल.-4729	96-110	17-18
कोटा मसूर-1	98-107	10-14
कोटा मसूर-2	97-104	12-15

सरसों की उन्नतशील किस्में



प्रजाति	अवधि (दिन)	उपज (क्विं/हे.)
गिरिराज	137-153	22-27
आर.एच.-749	135-140	26-28
आर.एच.-725	135-140	25-26
आर.एच.-761	137-143	26-27
डी.आर.एम.आर.1165-40	135-151	22-26
डी.आर.एम.आर. 150-35	135-140	18-20

अलसी की उन्नतशील प्रजातियां

उन्नत प्रजाति	अनुमोदित वर्ष	उपज (क्विं/हे.)
जवाहर अलसी- 67	2010	12-13
जवाहर अलसी- 73	2011	10-11
जवाहर अलसी- 41	2013	16-17
जवाहर अलसी- 79	2016	17-18
जवाहर अलसी- 66	2018	12-14
जवाहर अलसी- 95	2018	10-12
आर.सी.एल.-148	2018	13-14
जवाहर अलसी- 93	2019	10-11

रबी फसलों के उन्नत किस्मों के बीजों के प्रबंधन की सलाह

टीकमगढ़। कृषि विज्ञान केंद्र टीकमगढ़ के प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रमुख डॉ. बी.एस. किरार, डॉ. आर.के. प्रजापति एवं डॉ. एस.के. जाटव वैज्ञानिक द्वारा किसानों को रबी फसलों की उन्नत किस्मों की जानकारी दी जा रही है। रबी की प्रमुख फसलें गेहूं की अगेती किस्में 20 अक्टूबर से 10 नवम्बर तक 1-2 सिंचाई के लिए उपयुक्त शरबती किस्में एच.आई.-153 (हर्षिता), एच.डी. 2987 (पूजा बहार), एच.आई. 1605 (पूसा उजाला), जे.डब्ल्यू. 3211. जे.डब्ल्यू. 3269, एम.पी. 3288, डी.बी.डब्ल्यू. 110 और कठिया अगेती किस्में एच.आई. 8777, एच.आई. 8802, एच.आई. 8823 (पूसा प्रभात) और समय से 10 नवम्बर से 25 नवम्बर तक बुवाई के लिए जे.डब्ल्यू. 1201, जी.डब्ल्यू. 273, जी.डब्ल्यू. 322, जी.डब्ल्यू. 366, एच.आई. 1544 (पूर्णा), एच.आई. 1636 (पूसा वकुला), एच.आई. 1650, क्वॅ 303 (करण वैष्णवी) और कठिया की किस्में एम.पी.ओ. 1255, एच.आई. 8663 (पोषण), एच.आई. 8713 (पूसा मंगल) एच.आई. 8737 (पूसा अनमोल), एच.आई. 8759 (पूसा तेजस) और गेहूं की पछेती शरबती किस्में जिन्हें दिसम्बर से जनवरी तक बुवाई करने हेतु जे.डब्ल्यू. 1202, जे.डब्ल्यू. 1203, एम.पी. 3336, राज 4238, एच.डी. 2932 (पूसा-11), एच.आई. 1634 (पूसा अहिल्या) आदि किस्मों का भूमि एवं सिंचाई की उपलब्धता के आधार पर गेहूं की किस्मों का चयन करें। चना की उन्नत किस्में जे.जी. 12, आर.वी.जी. 202, आर.वी.जी. 201, जे.जी. 36 एवं मसूर की उन्नत किस्में आई.पी.एल. 316, एल. 4727, आर.वी.एल. 31, कोटा मसूर 2, दाल वाली सफेद मटर की नई किस्में आई.पी.एफ.डी. 11-5, आई.पी.एफ.डी. 12-2, दाल वाली हरी मटर की नई किस्में आई.पी.एफ.डी. 10-12, आई.पी.एफ.डी. 2014-2, आई.पी.एफ.डी. 1-19, पन्त मटर 243 तथा सरसों की नई किस्में राधिका, गिरिराज, एच.आर. 406, आर.एच. 749, आर.एच. 725, पी.एम. 30, अलसी की नई किस्में जे.एल.एस. 95, जवाहर अलसी 66, जवाहर अलसी 79, जौ की नई किस्में डी.डब्ल्यू.आर.बी. 137, आर.डी. 2715, आर.डी. 2552 आदि किस्मों का भूमि के रकबा के अनुसार बीज की व्यवस्था कर ली जाए। बीज की उपलब्धता हेतु चना और मटर की नई किस्मों के लिए कृषि विज्ञान केंद्र, टीकमगढ़ और प्रक्षेत्र प्रभारी, कृषि महाविद्यालय टीकमगढ़, कार्यालय संचालक प्रक्षेत्र, जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, जबलपुर से संपर्क किया जा सकता है।



● डॉ. स्वप्निल दुबे
वरिष्ठ वैज्ञानिक व प्रमुख
● डॉ. प्रदीप कुमार द्विवेदी
वैज्ञानिक (पौध संरक्षण)
कृषि विज्ञान केन्द्र, रायसेन (म.प्र.)



उन्नत विधि से अलसी की खेती

भारत वर्ष में रबी मौसम में उगाई जाने वाली तिलहनी फसलों राई एवं सरसों के बाद अलसी का प्रमुख स्थान है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से भारत का स्थान विश्व में क्रमशः तृतीय व चतुर्थ है।

भारत में अलसी की खेती लगभग 3.84 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल में की जाती है तथा उत्पादन 1.54 लाख टन के साथ उत्पादकता 525 किग्रा प्रति हेक्टेयर है जो कि विश्व में कुल रकबे एवं उत्पादन का 10.81 एवं 5.31 प्रतिशत है। क्षेत्रफल एवं उत्पादन की दृष्टि से मध्यप्रदेश का देश में प्रथम स्थान है। मध्यप्रदेश में अलसी की खेती 1.36 लाख हेक्टेयर में की जाती है, जिसमें 67,000 टन उत्पादन है, जबकि उत्पादकता 504 किग्रा प्रति हेक्टेयर है।

मप्र में अलसी उत्पादक जिले बालाघाट, रीवा, सागर, दमोह, सिवनी, सीधी, सतना, छतरपुर, रायसेन, पन्ना, मण्डला आदि हैं। अलसी के तेल के उत्पादन का 20 प्रतिशत भाग घरों में खाने के रूप में प्रयोग किया जाता है एवं 80 प्रतिशत भाग औद्योगिक संस्थानों में पेन्ट, वार्निश, लिनोनियम, लिखने तथा छपाई की स्याही बनाने में किया जाता है। नीचे बताये गये उत्पादन तकनीक को किसान भाई अपनाकर इसकी उपज को तीन गुना बना सकते हैं।

जलवायु : अलसी की फसल को ठंडे व शुष्क मौसम की आवश्यकता होती है। इसके उचित अंकुरण के लिये 25-30 सेल्सियस सेंटीग्रेट तथा बीज बनते समय 15-20 सेल्सियस सेंटीग्रेट तापमान होना चाहिये।

भूमि एवं भूमि की तैयारी : अलसी की फसल के लिये काली, भारी एवं दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। धान के भारी खेत जिसमें नमी अधिक समय तक संचित रहती है वहां भी उत्तेरा पद्धति से अलसी की खेती की जा सकती है। अलसी के अच्छे अंकुरण के लिये खेत को अच्छा भुरभुरा तैयार करना चाहिये। खेत को 2-3 बार आड़ी एवं खड़ी जुताई करके उसमें पाटा लगाकर नमी को संरक्षित करना चाहिये। धान के खेतों में समय-समय पर खरपतवार निकालकर खेत को नींदा रहित करते हुये साफ रखना चाहिये।

फसल प्रणाली : अलसी को मुख्य फसल के रूप में उगाने से मिलवा या अन्तरवर्तीय फसल की अपेक्षा अधिक आय होती है। अन्तरवर्तीय फसल पद्धति के अन्तर्गत अलसी के साथ 3:1 के अनुपात में चने, सरसों, मसूर को भी लगाकर अतिरिक्त आय प्राप्त की जा सकती है।

बीज की गहराई : अलसी के बीज को नमी के आधार पर भूमि में 3 सें.मी. की गहराई पर बुवाई करें। यदि भूमि में पर्याप्त नमी न हो तो उथली बुवाई लाभदायक होती है।

खाद एवं उर्वरक : रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग बुवाई के समय ही करें। गोबर की खाद उपलब्ध होने पर अंतिम बखरनी के समय 4-5 टन प्रति हेक्टेयर खेत में मिला दें। असिंचित अवस्था में 30:15:0 किलोग्राम नत्रजन, स्फुर व पोटाश प्रति हेक्टेयर सम्पूर्ण खाद बुवाई के समय में ही खेत में डालें। सिंचित अवस्था में 70:30:0 किलोग्राम नत्रजन, स्फुर, पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से उपयोग करें। नत्रजन की 2/3 मात्रा व स्फुर, पोटाश की पूरी मात्रा बुवाई के समय दें तथा नत्रजन की शेष 1/3 मात्रा को पहली सिंचाई के समय दें एवं उत्तेरा पद्धति में 20 किलो नत्रजन अलसी की फसल में दें।

खरपतवार नियंत्रण : अलसी की फसल को बुवाई से 30-35 दिन तक खरपवारों से मुक्त रखना चाहिये। फसलों को नींदा रहित रखने के लिये बुवाई के 15-20 दिन बाद पहली निंदाई-गुड़ाई करनी चाहिये या रासायनिक खरपतवार नियंत्रण के अन्तर्गत पेंडामिथलीन खरपतवारनाशक की 3.33 लीटर मात्रा को 600-700 लीटर पानी में घोल बनाकर अलसी के बीज के अंकुरण पूर्व उपयोग करें। प्रभावी नींदा नियंत्रण हेतु मेटसल्फ्यूरॉन मिथाईल 4 ग्राम ए.आई. के साथ क्लोडिनोफॉप 600 ग्राम प्रति 1.25 हेक्टेयर रकबे में 18-20 दिन की फसल में प्रयोग करें।

सिंचाई : अलसी की फसल में सिंचाई करने से उत्पादन में वृद्धि होती है अतः सिंचाई उपलब्ध होने पर पहली सिंचाई शाखा बनते समय (35 से 40 दिन) व दूसरी सिंचाई (65 से 70 दिन) कली बनने की अवस्था में करने से उत्पादन में वृद्धि होती है।

बीजोपचार : अलसी के बीज को मृदा जनित रोग से बचाव हेतु थायरम या कार्बेन्डाजिम 3 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित करें व बीजोपचार के पश्चात राइजोबियम व पी.एस.बी. कल्चर से 5-5 ग्राम प्रति किलो बीज के हिसाब से उपचारित कर बुवाई करें।

बीज दर बुवाई का समय व तरीका

दशा	बीजदर कि.ग्रा./हेक्टेयर	बोने का समय	पौधे की दूरी
असिंचित अवस्था	30	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से द्वितीय सप्ताह	25 सें.मी.
सिंचित अवस्था	20	अक्टूबर के प्रथम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह	25 सें.मी.
उत्तेरा पद्धति	35	अक्टूबर के दूसरे से तीसरे सप्ताह तक	छिटक कर

उन्नत किस्में

उन्नत प्रजाति (किग्रा/हे.)	अनुमोदित वर्ष विशेष गुणधर्म	उपज	
जवाहर अलसी- 67	201	1250-1300	सफेद फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 73	2011	1050-1100	नीला फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 41	2013	1600-1700	सफेद फूल, सिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 79	2016	1750-1800	नीला फूल, सिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 66	2018	1200-1400	नीला फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 95	2018	1085-1200	सफेद फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
आर.सी.एल.-148	2018	1300-1400	नीला फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त
जवाहर अलसी- 93	2019	1050-1150	सफेद फूल, असिंचित खेती के लिये उपयुक्त

रोग व कीट नियंत्रण

रोग	नियंत्रण
रतुआ रोग	कार्बेन्डाजिम (0.1 प्रतिशत) या डाएथेन एम.-45 (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
चूर्णी फफूंदी रोग	घुलनशील गंधक (0.3 प्रतिशत) व कैराथिन (0.25 प्रतिशत) का छिड़काव करें।
आल्टरनेरिया अंगमारी	थायरम 3 ग्राम प्रति किलो बीज से उपचारित कर बुवाई करें। डाएथेन एम.-45 का 0.25 प्रतिशत का छिड़काव करें।
अलसी बड फ्लाई	फास्फोमिडान 1.25 लीटर/हेक्टेयर का छिड़काव करें।

फसल की कटाई एवं गहाई : जब पौधों की पत्तियां सूख जायें, बोड़ियां भूरी पड़ जायें व दाने चमकीले हो जायें तब फसल की कटाई कर लेना चाहिये एवं बीज का सुरक्षित भण्डारण करें।



● डॉ. देवीदास पटेल
वैज्ञानिक (पादप प्रजनक)
कृषि विज्ञान केंद्र
गोविन्दनगर, नर्मदापुरम



आधुनिक पद्धति से करें गेहूं की खेती

प्र देश में मुख्यतः तीन दशाओं में गेहूं की खेती की जाती हैं (असिंचित एवं अर्धसिंचित, सिंचित एवं समय से बुआई एवं सिंचित एवं देर से बुआई) एवं तीनों परिस्थितियां वहां के वातावरण एवं स्थानीय स्त्रोतों पर निर्भर करती हैं। इस प्रकार गुणवत्ता युक्त गेहूं की खेती से अधिकाधिक लाभ लेने के लिये उसकी उन्नत किस्मों एवं उत्पादन तकनीक की जानकारी अति आवश्यकता हैं।

गेहूं की उत्पादकता बढ़ाने एवं खेती की लागत को कम करके, अधिक लाभांश लेने के लिए, गेहु की वैज्ञानिक तरीके से खेती करना होगा।

जलवायु

गेहूं की खेती के लिए समशीतोषण जलवायु की आवश्यकता होती है, इसकी खेती के लिए अनुकूल तापमान बुवाई के समय 20–25 डिग्री सेंटीग्रेट उपयुक्त माना जाता है।

भूमि का चयन

गेहूं सभी प्रकार की कृषि योग्य भूमियों में उगाया जा सकता है परन्तु दोमट से भारी दोमट, जलोढ़ मृदाओ मे गेहूँ की खेती सफलतापूर्वक की जाती है। जल निकास की सुविधा होने पर मटियार दोमट तथा काली मिट्टी में भी इसकी अच्छी फसल ली जा सकती है। काली मृदा में गेहूँ की खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता कम पड़ती है। भूमि का पी. एच. मान 5 से 7.5 के बीच में होना फसल के लिए उपयुक्त रहता है क्योंकि अधिक क्षारीय या अम्लीय भूमि गेहूं के लिए अनुपयुक्त होती है।

खेत की तैयारी

अच्छे अंकुरण के लिये एक बेहतर भुरभुरी मिट्टी की आवश्यकता होती है। समय पर जुताई खेत में नमी संरक्षण के लिए भी आवश्यक है। वास्तव में खेत की तैयारी करते समय हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि बोआई के समय खेत खरपतवार मुक्त हो, भूमि में पर्याप्त नमी हो तथा मिट्टी इतनी भुरभुरी हो जाये ताकि बुवाई आसानी से उचित गहराई तथा समान दूरी पर की जा सके। खरीफ की फसल की कटाई के तुरंत बाद ही एक गहरी जुताई कर जमीन को कुछ दिन खुली रहने दें यदि ठेले खड़े हो तो एक बार रोटावेटर चला दे अथवा दो से तीन बार तवे वाले हेरो को चलाकर पाटा लगा दे यदि उपलब्ध हो तो 10 से 20 टन गोबर की सड़ी खाद या कंपोस्ट खाद अंतिम जुताई के समय खेत में मिला दे।

बीज का चयन, दर एवं बीजोपचार

बुवाई के लिए जो बीज इस्तेमाल किया जाता है वह रोग मुक्त, प्रमाणित तथा उन्नत किस्म का होना चाहिए। सिंचाई जल की उपलब्धता के अनुसार गेहूं की किस्म का चयन करें भरोसेमंद संस्था से ही बीज खरीदें। बीज दर भूमि में नमी की मात्रा, बोने की विधि तथा किस्म पर निर्भर करती है। गेहूँ की बीज दर 100–125 किग्रा. प्रति हेक्ट्यर है। असिंचित खेती के लिए 100 कि.ग्रा., सिंचित व समय पर बुवाई हेतु 100–110 कि.ग्रा. एवं सिंचित व देर से बुवाई हेतु 120–125 कि.ग्रा. प्रति हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती हे। रोगों की रोकथाम के लिए बीज को बोने से पहले ट्राइकोडरमा की 4 ग्राम मात्रा को 1 ग्राम कार्बेन्डाजिम के साथ प्रति किग्रा बीज की दर से बीज शोधन कर के ही बोनी करना चाहिए।

बुआई का समय एवं पौध अंतरण

सामान्य तौर पर गेहूं की बुआई अक्टूबर से दिसंबर तक की जाती है। गेहूं की शीघ्र बुवाई करने पर बालियां पहले निकल आती है जिससे उत्पादन कम होता है जबकि कम तापक्रम पर बुवाई करने पर अंकुरण देर से होता है। असिंचित अवस्था में गेहूं की बुआई वर्षा ऋतु समाप्त होते ही मध्य अक्टूबर में कर देना चाहिए। अर्द्धसिंचित अवस्था में जहां पानी सिर्फ 2–3 सिंचाई के लिये ही उपलब्ध हो, वहाँ बोने का उपयुक्त समय 25 अक्टूबर से 15 नवम्बर तक है। सिंचित गेहूं बोने का उपयुक्त समय नवम्बर का प्रथम पखवाड़ा है। बोनी में 30 नवम्बर से अधिक देरी नहीं होना चाहिए। यदि किसी कारण से बोनी विलंब से करनी हो तब देर से बोने वाली किस्मों की बोनी दिसम्बर के प्रथम सप्ताह तक हो जाना चाहिये। देर से बोई गई फसल को पकने से पहले ही सूखी और गर्म हवा का सामना करना पड़ जाता है जिससे दाने सिकुड़ जाते हैं तथा उपज कम हो जाती हैं। बुवाई के समय कतारों के बीच की दूरी 20–22 से.मी. एवं बीज की गहराई 3–5 से.मी. रखते हैं। गेहूं की बुआई पूर्व-पश्चिम में करने पर गेहूं के पौधे सूर्य की रोशनी का उचित उपयोग प्रकाश संश्लेषण में कर लेते हैं, जिससे उपज अधिक मिलती है।

गेहूं की नवीन उन्नत किस्म

किस्म	अवधि (दिन)	उपज (प्रति हे.)	विशेषताए
सिंचित (समय से)			
डी.बी.डब्ल्यू. 303	125-130	65-70	पौधे की औसत ऊंचाई 100-101 से.मी. होती हैं। यह भूरी एवं काली गेरूआ के लिए प्रतिरोधी किस्म हैं। इसके दानें सख्त व अम्बर कलर के होते हैं।
डी.बी.डब्ल्यू. 187	125-130	65-70	यह किस्म पीले रतुआ और गेहूं विस्फोट रोग के लिए प्रतिरोधी है। उच्च गर्मी सहनशीलता है।
एच.आई. 1636	110-120	50-55	दाना अंबर, चमकदार, बालियां गसी हुई। अधिक पोषक तत्व एवं सभी प्रकार के गेरूआ के प्रति रोगरोधी किस्म हैं।
जी.डब्ल्यू. 322	115-120	60-62	दाना शरबती, चमकदार एवं चपाती के लिये उपयुक्त, तना एवं पीला गेरूआ के प्रति रोगरोधी किस्म हैं।
जी.डब्ल्यू. 366	116-120	51-52	पौधे की औसत ऊंचाई 91-95 से.मी. होती है। यह भूरी एवं काली गेरूआ के लिए प्रतिरोधी किस्म है।इसके दाने सख्त व अम्बर कलर के होते हैं। इसके 1000 दानों का औसत वजन 49 ग्राम होता है।
एच.आई. 1544	110-115	51.40	पौधे की औसत ऊंचाई 85-90 से.मी. होती है। इसके दानें अम्बर कलर एवं मध्य सख्त होते हैं। इसके 1000 दानों का औसत वजन 40-45 ग्राम होता हैं।
एच.आई. 8498	116-120	44	पौधे की औसत ऊंचाई 80-85 से.मी. होती हैं। यह गेरूआ के लिए प्रतिरोधी किस्म है। इसके 1000 दानों (मालवशक्ति) का औसत वजन 50 ग्राम होता है।
जे.डब्ल्यू. 1215	115-120	55-60	दाना अंबर, चमकदार, सभी बिमारियों की लिये सहनशील
सिंचित (देरी से)			
जे.डब्ल्यू. 1202	105-110	42-45	दाना आकर्षक, बड़े आकार का, चपाती के लिये उपयुक्त यह सभी रोगों के प्रति सहनशील हैं।
जे.डब्ल्यू. 1203	105-110	42-45	दाना आकर्षक, बड़े आकार का, चपाती के लिये उपयुक्त साथ ही साथ प्रोटीन की प्रचूर मात्रा, सभी रोगों के प्रति सहनशील हैं।
एच.डी. 2932		40-45	पौधे की औसत ऊंचाई 70-75 से.मी. होती हैं। इस किस्म में अधिक फुटान, गहरे हरे रंग की मोमरहित पत्तियां तना मजबूत होता है। यह किस्म काली एवं भूरी गेरूआ प्रतिरोधी किस्म हैं। इसके 1000 दानों का औसत वजन 35-40 ग्राम होता है।
असिंचित या अर्धसिंचित			
एच.आई. 8823	115-120	40-45	अधिक पोषक तत्व एवं सभी प्रकार के गेरूआ के प्रति रोगरोधी किस्म हैं।
जे.डब्ल्यू. 3288	120-122	45-47	दाना लंबा चमकदार, आकर्षक, शरबती, मध्यम ऊंचाई, रोगों के प्रति सहनशील
जे.डब्ल्यू. 3269	115-120	42-45	सूखा एवं काला गेरूआ के प्रति सहनशील
एच.आई. 1531 (हर्षिता)	115-120	40-45	मध्यम ऊंचाई, दाना शरबती, मध्यम आकार का, रोगों के प्रति सहनशील
जे.डब्ल्यू. 3211	115-120	40-45	मध्यम ऊंचाई, दाना लंबा चमकदार, आकर्षक, शरबती, रोगों के प्रति सहनशील चपाती एवं गुणवत्ता में सुजाता के समान

बुवाई की विधियां

गेहूँ की बोआई चार विधियों से (छिटक कर, हल के पीछे कूड़ में, सीडड्रिल से या डिबलिंग) की जाती है। गेहूं बोआई हेतु स्थान विशेष की परिस्थिति अनुसार विधियाँ प्रयोग में लाई जा सकती है।

छिटकवाँ विधि: बीज को हाथ से समान रूप से खेत में छिटक दिया जाता है और पाटा अथवा देशी हल चलाकर बीज को मिट्टी से ढक दिया जाता है। इस विधि से गेहूँ उन स्थानो पर बोया जाता है, जहाँ अधिक वर्षा होने या मिट्टी भारी दोमट होने से नमी अपेक्षाकृत अधिक समय तक बनी रहती है। इस विधि से बोये गये गेहूं का अंकुरण ठीक से नहीं हो पाता, पौधे अव्यवस्थित ढंग से उगते हैं, बीज अधिक मात्रा में लगता है एवं निराई-गुड़ाई में असुविधा होती है।

सीडड्रिल द्वारा बुवाई: विस्तृत क्षेत्र में बुवाई करने के लिये यह एक आसान विधि है । इसमे बुवाई बैल चलित या ट्रैक्टर चलित सीडड्रिल यंत्र द्वारा की जाती है। इस मशीन में पौध अन्तरण व बीज दर का समायोजन इच्छानुसार किया जा सकता है। इस विधि से बीज भी कम लगता। **(शेष पृष्ठ 14 पर)**



फूल गोभी लगायें फायदा कमाएं



● डॉ. एस.के. त्यागी
विषय वस्तु विशेषज्ञ (उद्यान विज्ञान)
कृषि विज्ञान केन्द्र, खरगोन (म.प्र.)

शरदकालीन सब्जियों में फूलगोभी का प्रमुख स्थान है। यह एक स्वादिष्ट तथा लोक-प्रिय सब्जी है। फूलगोभी से सब्जी, अचार और पकोड़े बनाये जाते हैं फूलगोभी में प्रोटीन, कैल्शियम, फास्फोरस, विटामि 'ए' तथा 'सी' पर्याप्त मात्रा में होते हैं।

जलवाय - फूलगोभी के लिए ठण्डी और आर्द्र जलवायु की आवष्यकता होती है। फूल तैयार होने के समय तापमान अधिक होने पर फूल छितरे, पत्तेदार और पीले रंग के हो जाते हैं।

मृदा- फूलगोभी की खेती विभिन्न प्रकार की मृदाओं में की जा सकती है, किन्तु गहरी दोमट मृदा जिसमें जल निकास की उचित व्यवस्था हो इसकी खेती के लिए अच्छी होती है।

उन्नत किस्में

पूसा अगेती- यह शीघ्र तैयार होने वाली (90-100) किस्म है। मई-जून में बीज बोए जाते हैं और सितम्बर-अक्टूबर में फूल कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर लगभग 80-100 क्विंटल तक पैदावार मिल जाती है।

पूसा दीपाली- यह भी शीघ्र तैयार होने वाली (100 दिन) किस्म हैं। फूल मध्यम आकार के सफेद तथा ठोस होते हैं। जो कि मध्य अक्टूबर से कटाई के लिए तैयार हो जाते हैं। प्रति हेक्टेयर 100 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पूसा स्नोबॉल-1- यह संकरण द्वारा विकसित किस्म हैं फूल सफेद, ठोस और मध्यम आकार के होते हैं। पिछेती किस्म होने के कारण इसे उत्तरी भारत में अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के अन्त तक रोपाई की जा सकती है। इस किस्म से 150-200 क्विंटल उत्पादन प्रति हेक्टेयर मिल जाता है।

पूसा स्नोबॉल-2- इस किस्म को चयन द्वारा विकसित किया गया है। फूल सफेद एवं ठोस होता है। फूलों की भण्डारण क्षमता अधिक होती है। यह किस्म अक्टूबर के अन्त से नवम्बर के मध्य तक रोपाई के लिए उपयुक्त है। प्रति हेक्टेयर 150-200 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पूसा स्नोबॉल के-1- इस किस्म का विकास भी चयन द्वारा किया गया है। फूल सफेद, ठोस और उत्तम भण्डारण क्षमता वाले होते हैं। इस किस्म की रोपाई अक्टूबर क अन्त से नवम्बर के मध्य तक की जाती है। यह किस्म ब्लैक रॉट नामक रोग के लिए प्रतिरोधी है। इस किस्म से 150-200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर उपज प्राप्त की जाती है।

खाद एवं उर्वरक - फूल गोभी की अधिक पैदावार लेने के लिए खाद और उर्वरक दोनों का समुचित मात्रा में और सही समय पर इस्तेमाल करना नितान्त आवश्यक है। गोबर की खाद 250 क्विंटल, नत्रजन 100 किलो, स्फुर 75 किलो तथा पोटाश 40 किलो प्रति हैक्टेयर आवश्यक होता है। गोबर की खाद खेत तैयार करते समय स्फुर तथा पोटाश पौध रोपण के पहले तथा नाइट्रोजन दो भागों में क्रमशः रोपाई के 10-15 दिन तथा 25-30 दिन बाद देना चाहिए।

बीज की मात्रा- एक हेक्टेयर के लिए 650-750 ग्राम बीज पर्याप्त होता है।

पौध तैयार करना- उचित आकार की सामान्यतया 21 मीटर आकार की 10-15 सेमी ऊंची क्यारी बनाकर बीज कतारों में बोना चाहिए। पौधे क्यारियों में जब 4-6 सप्ताह हो जायें तब खेत में लगाना चाहिए।

रोपाई- रोपाई की दूरी भूमि की उर्वरता तथा मौसम के ऊपर निर्भर करती है। शीघ्र तैयार होने वाली किस्मों को कतार से कतार 45 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 30 सेमी तथा मध्यम एवं देर से तैयार होने वाली किस्मों के लिए कतार से कतार 60 सेमी व पौधे से पौधे की दूरी 45 सेमी रखनी चाहिए।

सिंचाई- पौध रोपने के तुरंत बाद सिंचाई करें। सामान्यतः 10-15 दिन के अन्तर से सिंचाई करना चाहिए।

निराई-गुड़ाई- फूलगोभी की फसल के साथ उगे खरपतवारों की रोकथाम के लिए आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करते रहे, अधिक गहरी गुड़ाई न करें।

ब्लांचिंग- फूल का रंग आकर्शक सफेद बनाने के लिए, पौधे की चारों ओर फैली हुई पत्तियों को फूल के ऊपर समेटकर बांध देने को ब्लांचिग कहते हैं। यह क्रिया फूल तैयार होने के 8-10 दिन पूर्व की जानी चाहिए।

कटाई- जब फल पूर्ण रुप से विकसित हो जाय तब काट लेना चाहिए। काटते समय यह ध्यान रखें कि फूल में खरोंच या रगड़ न लगने पायें।

उपज- एक हेक्टेयर से 200-250 क्विंटल तक उपज मिल जाती है।

पौध संरक्षण

कीट नियंत्रण

कैबेज बोरर- यह इल्ली पत्तियों में छेद कर खा जाती है। जिसके कारण पौधे सूख जाते हैं। इस कीट के नियंत्रण के लिए इण्डोसल्फान की 2 मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घेलकर छिड़काव करें।

माहो - यह कीट पत्तियों और पौधे के अन्य कोमल भागों का रस चूसता है, जिसके कारण पत्तियां पीली पड़ जाती है। इस कीट के नियंत्रण क लिए डायमिथेएट 30 ई.सी. की 2 मिलीलीटर मात्रा को 1 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

मैगट पौधे के मध्य भाग को खाते हैं। जिससे तने का आन्तरिक भाग सड़ जाता है। तना खोखला हो जाता है। इस कीट के नियंत्रण के लिए ट्रायजोफास 40 ईसी की 2 मिली लीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

(शेष पृष्ठ 15 पर)





(पृष्ठ 12 का शेष) **आधुनिक पद्धति....**

और बुवाई निश्चित दूरी तथा गहराई पर सम रूप से हो पाती है जिससे अंकुरण अच्छा होता है। इस विधि से बोने में समय कम लगता है।

डिबलर द्वारा बोआई: इस विधि में प्रत्येक बीज को मिट्टी में छेदकर निर्दिष्ट स्थान पर मन चाही गहराई पर बोते हैं। इसमें एक लकड़ी का फ्रेम को खेत में रखकर दबाया जाता है। इसमें लगी हुई खूंटियों से भूमि में छेद हो जाते हैं जिनमें 1-2 बीज प्रति छेद की दर से डालते हैं। इस विधि से बीज की मात्रा काफी कम (25-30 किग्रा. प्रति हेक्टेयर) लगती है परन्तु समय व श्रम अधिक लगने के कारण उत्पादन लागत बढ़ जाती है।

शून्य कर्षण सीडड्रिल विधि: धान की कटाई के उपरांत किसानों को गेहूं फसल के लिए खेत तैयार करना पड़ता है। इसमें लागत भी अधिक आती है। ऐसे में किसानों को अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता। शून्य कर्षण से किसानों का समय तो बचता ही है, साथ ही लागत भी कम आती है, जिससे किसानों का लाभ काफी बढ़ जाता है। इस विधि के माध्यम से खेत की जुताई और बुवाई दोनों ही काम एक साथ हो जाते हैं। इससे बीज भी कम लगता है और पैदावार करीब 15 प्रतिशत बढ़ जाती है। खेत की तैयारी में लगने वाले श्रम व सिंचाई के रूप में भी करीब 15 प्रतिशत बचत होती है। इसके अलावा खरपतवार प्रकोप भी कम होता है, जिससे खरपतवारनाशकों का खर्च भी कम हो जाता है। समय से बुआई होने से पैदावार भी अच्छी होती है।

खरपतवार नियंत्रण : गेहूं के साथ अनेक प्रकार के खरपतवार भी खेत में उगकर पोषक तत्वों, प्रकाश, नमी आदि के लिए फसल के साथ प्रतिस्पर्धा करते हैं। यदि इन पर नियंत्रण नहीं किया गया तो गेहूं की उपज में 10-40 प्रतिशत तक हानि संभावित है। बोआई से 30-40 दिन तक का समय खरपतवार प्रतिस्पर्धा के लिए अधिक क्रांतिक रहता है। गेहूँ के खेत में चौड़ी पत्ती वाले और घास कुल के खरपतावारों का प्रकोप होता है।

चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार: कृष्णनील, बथुआ, हिरनखुरी, सैंजी, चटरी-मटरी, जंगली गाजर आदि के नियंत्रण हेतु 2,4-डी इथाइल ईस्टर 36 प्रतिशत की 1.4 लीटर मात्रा को 700-800 लीटर पानी मे घोलकर एक हेक्टेयर में बोनी के 18-20 दिन के अन्दर छिड़काव करना चाहिए।

संकरी पत्ती वाले खरपतवार: गेहूं में जंगली जई व गेहूँसा का प्रकोप अधिक देखा जा रहा है। इनके नियंत्रण के लिए पेन्डीमिथेलिन 30 ईसी (स्टाम्प) 1 लीटर प्रति हेक्टेयर अथवा आइसोप्रोटयूरॉन 50 डब्लू.पी. 1.5 किग्रा. प्रति हेक्टेयर को बुवाई के 2-3 दिन बाद 700-800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर छिड़काव करें। खड़ी फसल में बोआई के 20-25 दिन बाद मेटाक्सुरान की 1.5 कि.ग्रा. मात्रा को 700 से 800 लीटर पानी में मिलाकर प्रति हेक्टेयर छिड़कना चाहिए। मिश्रित खरपतवार की समस्या होने पर आइसोप्रोट्यूरान 800 ग्रा. और 2,4-डी 0.4 लीटर प्रति हे. को मिलाकर छिड़काव करना चाहिए।

सिंचाई: आमतौर पर गेहूं से अधिकतम उपज प्राप्त करने के लिए हल्की भूमि में गेहूं की सिंचाई निम्न अवस्थाओं में करनी चाहिए। इन अवस्थाओं पर जल की कमी का उपज पर भारी कुप्रभाव पड़ता है, परन्तु गेहूं की सिंचाई हल्की करें।

सिंचाई	अवस्था	समय (बुआई के बाद) दिन
पहली सिंचाई	क्राउन रूट (ताजमूल अवस्था)	20 से 25
दूसरी सिंचाई	कल्ले निकलते समय	40 से 45
तीसरी सिंचाई	दीर्घ सन्धि अथवा गांठे बनते समय	60 से 65
चौथी सिंचाई	पुष्पावस्था	80 से 85
पांचवी सिंचाई	दुग्धावस्था	100 से 105
छठी सिंचाई	दाना भरते समय	115 से 120

दोमट या भारी दोमट भूमि में निम्न चार सिंचाइयां करके भी अच्छी उपज प्राप्त की जा सकती है, परन्तु प्रत्येक सिंचाई कुछ गहरी 8 सें.मी. करें।

सिंचाई	अवस्था	समय (बुआई के बाद) दिन
पहली सिंचाई	क्राउन रूट (ताजमूल अवस्था)	20 से 25
दूसरी सिंचाई	कल्ले निकलते समय	45 से 40
तीसरी सिंचाई	दीर्घ सन्धि अथवा गांठे बनते समय	70 से 80
चौथी सिंचाई	पुष्पावस्था	95 से 110

सीमित गेहूं की सिंचाई साधन की दशा में

यदि आपके पास तीन गेहूं की सिंचाई की सुविधा ही उपलब्ध हो तो ताजमूल अवस्था और बाली निकलने के पूर्व तथा दुग्धावस्था पर करें। यदि सिंचाई के लिए दो ही सिंचाइयां उपलब्ध हों तो ताजमूल और पुष्पावस्था पर करें। यदि एक ही सिंचाई उपलबध हो तो ताजमूल अवस्था पर करें।

गेहूं की सिंचाई में निम्नलिखित तीन बातों पर ध्यान दें-

★ गेहूं बुआई से पहले खेत भली-भाति समतल करें और किसी एक दिशा में हल्का ढाल दें, जिससे जल का पूरे खेत में एक साथ वितरण हो सके।

★ गेहूं की बुआई के बाद खेत को मिट्टी और सिंचाई के साधन के अनुसार आवश्यक माप की क्यारियों या पट्टियों में बांट दें, इससे जल के एक साथ वितरण में सहायता मिलती है।

★ हल्की भूमि में विश्वसनीय सिंचाई सुविधा होने पर सिंचाई हल्की लगभग 6 सेंटीमीटर करें और दोमट एवं भारी भूमि में और सिंचाई साधन की दशा में सिंचाई कुछ गहरी यानि प्रति सिंचाई लगभग 8 सेंटीमीटर करें।

उर्वरकों का प्रयोग : उर्वरकों का प्रयोग मृदा परीक्षण के आधार पर करना चाहिए, गेहूं की अच्छी उपज के लिए खरीफ की फसल के बाद भूमि में 150 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस, तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश प्रति हेक्टेयर तथा देर से बुवाई करने पर 80 कि.ग्रा. नत्रजन, 60 कि.ग्रा. फास्फोरस, तथा 40 कि.ग्रा. पोटाश, अच्छी उपज के लिए 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर सड़ी गोबर की खाद का प्रयोग करना चाहिए। गोबर की खाद एवं आधी नत्रजन की मात्रा तथा पोटाश की पूरी मात्रा खेत की तैयारी के समय आखिरी जुताई में या बुवाई के समय खाद का प्रयोग करना चाहिए। शेष नत्रजन की आधी मात्रा पहली सिंचाई पर तथा बची शेष मात्रा दूसरी सिंचाई पर प्रयोग करनी चाहिए। गेहूं की खेती के लिए 3 साल के अंतराल पर 25 कि.ग्रा. जिंक सल्फेट बुवाई से पहले करना चाहिए।

कीट और उनका प्रबंध : गेहूं की फसल में शुरू में दीमक कीट बहुत ही नुकसान पहुंचता है। इसकी रोकथाम के लिए दीमक प्रकोपित क्षेत्र में नीम की खली 10 क्विंटल/ हेक्टेयर की दर से खेत की तैयारी के समय प्रयोग करना चाहिए तथा पूर्व में बोई गई फसल के अवशेष को नष्ट करना अति आवश्यक है। इसके साथ ही माहू भी गेहूं की फसल में लगती है, ये पत्तियों तथा बालियों का रस चूसते हैं, ये पंखहीन तथा पंखयुक्त हरे रंग के होते हैं, सैनिक कीट भी लगता है पूर्ण विकसित सुंडी लगभग 40 मि.मी. लम्बी बादामी रंग की होती है। यह पत्तियों को खाकर हानि पहुंचाती है। इसके साथ-साथ गुलाबी तना बेधक कीट लगता है। ये सुंडी भूरे गुलाबी रंग की लगभग 5 मिली मीटर की लम्बी होती है, इसके काटने से फल की वानस्पतिक बढ़वार रुक जाती है। इन सभी कीट की रोकथाम के लिए कीटनाशी जैसे क्यूनालफास 25 ई.सी. की 1.5-2.0 ली. मात्रा 700-800 ली. पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए या सैपरमेथ्रिन 750 मी.ली. या फेंवेलेरेट 1 ली. 700-800 ली. पानी में घोलकर प्रति हेक्टे. की दर से छिड़काव करना चाहिए। कीटों के साथ साथ चूहे भी लगते हैं, ये खड़ी फसल में नुकसान पहुंचाते हैं। चूहों के लिए जिंक फास्फाइट या बेरियम कार्बोनेट के बने जहरीले चारे का प्रयोग करना चाहिए, इसमें जहरीला चारा बनाने के लिए 1 भाग दवा, 1 भाग सरसों का तेल तथा 48 भाग दाना मिलाकर बनाया जाता है जो कि खेत में रखकर प्रयोग करते हैं।

कटाई : जब गेहूं के दाने पक कर सख्त हो जाय और उनमें नमी का अंश 18-20 प्रतिशत तक आ जाये, फसल की कटाई करनी चाहिये। कटाई में देरी करने से दाने झड़ने लगते हैं और पक्षियों द्वारा नुकसान होने की संभावना रहती है। कटाई के पश्चात् फसल को 2-3 दिन खलिहान में सुखाकर मड़ाई शक्ति चालित थ्रेशर से की जाती है। कम्बाइन हारवेस्टर का प्रयोग करने से कटाई, मड़ाई तथा ओसाई एक साथ हो जाती है परन्तु कम्बाइन हारवेस्टर से कटाई करने के लिए, दानों में 20 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि दानों में ज्यादा नमी रहने पर मड़ाई या गहाई ठीक से नहीं होगी।

उपज: उन्नत सस्य तकनीक से खेती करने पर सिंचित अवस्था में गेहूं की उन्नत किस्मों से लगभग 50-60 क्विंटल दाना के अलावा 80-90 क्विंटल भूसा प्रति हेक्टेयर प्राप्त होता है। जबकि देशी किस्मों से इसकी लगभग आधी उपज प्राप्त होती है।

भंडारण: सुरक्षित भंडारण हेतु दानों में 10-12 प्रतिशत से अधिक नमी नहीं होना चाहिए। भंडारण के पूर्ण कुठिया तथा कमरों को साफ कर लें।



फसलों में जिंक की उपयोगिता

● **डॉ. गीता सिंह,** वैज्ञानिक कृषि विस्तार
कृषि विज्ञान केंद्र, डिंडोरी
जवाहरलाल नेहरू कृषि विवि., जबलपुर

पौधों की स्वस्थ वृद्धि के लिए बहुत सारे खनिज पदार्थ आवश्यक होते हैं। जिनमें से 16 पोषक तत्व पौधों की बढ़वार के लिए अति आवश्यक होते हैं। इनमें से 7 तत्वों को सूक्ष्म पोषक तत्व कहते हैं। इनके नाम हैं- लोहा, जस्ता (जिंक), मैग्नीशियम, बोरोन, तांबा, मोलीबदेनम एवं क्लोरीन। इनकी आवश्यकता पौधों को सूक्ष्म मात्रा में होती है, परन्तु पौधों की वृद्धि एवं विकास में इनका विशेष योगदान होता है। इनकी उपलब्धता पौधों को अपना जीवन चक्र पूरा करने के लिए अति आवश्यक होती है।



जिंक एक आवश्यक सूक्ष्म पोषक तत्व है जो फसल उत्पादन में एंजाइमों को सक्रिय करता है, क्लोरोफिल और कार्बोहाइड्रेट के संश्लेषण में मदद करता है, प्रोटीन निर्माण में सहायक होता है और ऑक्सिन जैसे वृद्धि हार्मोन के उत्पादन को बढ़ावा देता है, जिससे स्वस्थ वृद्धि, पत्ती का विकास और समग्र उपज में सुधार होता है।

जिंक की भूमिकाएं

एंजाइमों का सक्रियण: जिंक पौधों में कई महत्वपूर्ण एंजाइमों के लिए एक सक्रियक के रूप में कार्य करता है, जो विभिन्न उपापचयी प्रतिक्रियाओं को संचालित करने के लिए आवश्यक है। **प्रोटीन संश्लेषण:** यह प्रोटीन और एंजाइमों के संश्लेषण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जो पौधों के विकास और कार्य के लिए आवश्यक हैं। **क्लोरोफिल निर्माण:** जिंक क्लोरोफिल के निर्माण के लिए आवश्यक है, जो प्रकाश संश्लेषण का मुख्य वर्णक है। **कार्बोहाइड्रेट चयापचय:** यह पौधों में कार्बोहाइड्रेट चयापचय में शामिल होता है, जो ऊर्जा उत्पादन और पौधों के भोजन के लिए महत्वपूर्ण है। **वृद्धि और विकास:** जिंक ऑक्सिन के उत्पादन के लिए आवश्यक है, जो पौधों में वृद्धि और तने की लंबाई को नियंत्रित करता है।

रोग प्रतिरोधक क्षमता: यह पौधों में रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने में भी मदद करता है।

जिंक की कमी के लक्षण

पत्तियों का पीला पड़ना: जिंक की कमी से पत्तियां पीली पड़ने लगती हैं, जो क्लोरोफिल निर्माण में कमी का संकेत हैं।

पत्तियों का आकार छोटा होना: नई पत्तियां छोटी हो जाती हैं और तने की लंबाई में कमी आ सकती है। **वृद्धि में बाधा:** जिंक की कमी से पौधों की कुल वृद्धि और विकास रुक सकता है। **अंकुरों का मरना:** गंभीर कमी की स्थिति में अंकुरों के सिरे मर सकते हैं।

जिंक की कमी के प्रति संवेदी फसलें

जिंक की कमी के प्रति फसलें अत्यधिक एवं मध्यम संवेदी एवं कम संवेदी होती हैं अत्यधिक संवेदी फसलों में अधिक जिंक डालने की आवश्यकता होती है।

अति संवेदी: धान,गेहूं, सोयाबीन, मक्का, उड़द, मूंग एवं मटर। **मध्यम संवेदी:** आलू, सूरजमुखी, कपास, ज्वार, शकरकंद, टमाटर। **कम संवेदी:** सरसों, कुसुम, लघु धन्य एवं गाजर।

अति संवेदी फसलें

धान: जिंक की कमी से धान में होने वाले रोग को खैरा रोग कहते हैं। इस रोग के कारण रोपाई के 15 से 25 दिन बाद पौधों की तीसरी एवं चौथी पत्तियां पहले हरिमहीनता के लक्षण प्रदर्शित करती हैं, इसके बाद इन पर भूरे सुनहरे रंग के छोटे छोटे धब्बे पड़ जाते हैं जो बाद में एक दूसरे से मिलकर सभी पत्तियों पर फैल जाते हैं। परिणामस्वरूप पूरा पूरा पौधा ही लाल भूरा दिखाई देने लगता है और अंत में पत्तियां मर जाती हैं।

गेहूं: जिंक की कमी के लक्षण पौधों में कल्ले प्रारंभ होने के कुछ पहले ही दिखाई देने लगते हैं। पुरानी पत्तियों के मध्य भाग पीले पड़ जाते हैं और इन धब्बों के स्थानों पर ऊतक मर जाते हैं। फलस्वरूप प्रभावित पत्तियां बीच से नीचे की ओर झुक जाती हैं जिससे उत्पादन में कमी आती है।

मक्का: मक्के में जिंक की कमी से मध्य पूर्ण विकसित पत्तियों की शिराओं के बीच के भाग में हल्की पीली धारियां पड़ जाती हैं जो बाद में सफेद रंग धारण कर लेती हैं। नई निकली पत्तियां प्राय: हल्की पीली या सफेद रंग की होती हैं। अत: इस रोग को सफेद कलिका रोग कहते हैं।

सोयाबीन: पौधों में दूसरी पत्ती अवस्था के तुरंत बाद इस रोग के लक्षण दिखाई देते हैं। पत्तियों के शिराओं के मध्य में हरिमहीनता एवं पुरानी पत्तियों में सदन दिखलाई पड़ती है। ऊपरी पत्तियों में सिकुड़न आने लगती है।

जिंक की कमी कैसे दूर करें?

धान की फसल में जिंक रोपाई के 10 से 20 दिन बाद जब फसल शुरुआती बढ़वार पर हो, डालना चाहिए। यह वह समय होता है जब आप पहली यूरिया खाद देते हैं और इसी समय जिंक का उपयोग करना सबसे अच्छा होता है। जिंक को डीएपी या अन्य फास्फेट खाद के साथ नहीं मिलाना चाहिए, क्योंकि इनसे जिंक फॉस्फेट बन जाता है और जिंक पौधे को नहीं मिल पाता है।

जिंक डालने का सही समय: रोपाई के बाद 10-20 दिन जब फसल शुरुआती अवस्था में होती है और पहली यूरिया खाद डाली जाती है, उस समय जिंक को मिट्टी में मिलाना चाहिए।

डीएपी से अंतर: अगर आपने रोपाई के समय डीएपी या कोई फास्फेट खाद डाली है, तो जिंक डालने से पहले कम से कम 18-20 दिन का अंतर रखें. फास्फोरस और जिंक के बीच यह अंतर आवश्यक है ताकि पौधा दोनों तत्वों को ठीक से ग्रहण कर सके।

जिंक डालने का सही तरीका

खाद के साथ: जिंक सल्फेट (21 या 33 प्रतिशत) या मोनोहाइड्रेट जिंक (33 प्रतिशत) को यूरिया के साथ मिलाकर मिट्टी में डाल सकते हैं।

स्प्रे के लिए: अगर जिंक की कमी के लक्षण दिखें, तो चेलेटेड जिंक या जिंक ऑक्साइड को पानी में घोलकर पत्तियों पर छिड़काव कर सकते हैं, खासकर जब कल्ले निकलने की अवस्था हो।

जिंक डालने के फायदे

▸ पौधे में क्लोरोफिल की मात्रा बढ़ती है, जिससे फसल हरी-भरी दिखती है। ▸ कल्लों की संख्या बढ़ती है, जिससे बालियां ज्यादा निकलती हैं और उत्पादन में वृद्धि होती है। ▸ फसल में खैरा रोग से बचाव होता।

(पृष्ठ 13 का शेष)

फूल गोभी लगायें

डायमण्ड ब्लेक माथ- यह कीट पत्तियों को खाता है तथा पत्तियों में ही अण्डे देती है। इस कीट के पंख हीरे के समान होते हैं इस कीट के नियंत्रण के लिए मैलाथियान 50 ईसी की 2 मिलीलीटर मात्रा को एक लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

रोग एवं उनकी रोकथाम

आर्द्रगलन - इस रोग में पौधशाला में पौधों का तना नीचे से गल जाता है। इस रोग की रोकथाम के लिए 0.1 प्रतिशत फाइटोलान से भूमि उपचार करें।

काला विगलन- इस रोग में रोगी पौधों की पत्तियों पर अंग्रेजी के वी आकार के भूरे या पीले रंग के धब्बे स्पष्ट दिखाई देते हैं। डंठल या जड़ के भीतरी भाग काले पड़ जाते हैं। पत्ते धीरे-धीरे पीले पड़कर सूख जाते हैं। इस रोग की रोकथाम के लिए बीज को 50 सेल्सियस गर्म पानी में 30 मिनट तक डुबोयें तथा बीज को बाविस्टीन 1 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करें।

बटनिंग या बोल्टिंग- इसमें फूलों के पकने से पूर्व ही फूल छोटे रहकर फटने लगते हैं और पौधों का विकास भी सामान्य नहीं होता है। अगेती जातियों को देर से बोने पर यह समस्या आती है। अत: विभिन्न किस्मों की नर्सरी में समय से बुवाई व खेत में रोपाई करें।

व्हिप टेल- अम्लीय भूमि में पौधों को मोलीब्डिनम पर्याप्त न मिलने के कारण पत्र-दल का उचित विकास न होकर केवल मध्य षिरा का ही विकास होता है। इसके नियंत्रण के लिए भूमि में एक किलोग्राम अमोनियम मोलीब्डेट प्रति हेक्टेयर की दर से मिलायें।

नोट- सभी प्रकार के कीटों के प्रकोप की प्रारंभिक अवस्था में नीम तेल 5 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें।

कृषि महाविद्यालय रीवा में विशाल भंडारे का आयोजन

रीवा। कृषि महाविद्यालय रीवा में नवदुर्गा समिति द्वारा नवरात्रि के अवसर पर मां दुर्गा की विशाल प्रतिमा स्थापित कर विभिन्न धार्मिक, सांस्कृतिक एवं रचनात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। नवरात्रि के समापन अवसर पर महाविद्यालय परिसर स्थित दुर्गा पंडाल में विशाल आरती एवं भंडारे का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय के प्राध्यापकों, कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने सहभागिता की।

नवरात्रि के दौरान छात्र-छात्राओं के लिए रंगोली, मां काली, हिरण्यकश्यप तथा सुदामा-कृष्ण प्रसंगों पर आधारित चित्रण सहित विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. रघुराज किशोर तिवारी ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कृत किया।



(पृष्ठ 8 का शेष)

उन्नत तकनीक से बोयें चना...

बुवाई का समय: फसल से अधिक पैदावार प्राप्त करने के लिए खेत में प्रति इकाई पौधों की उचित संख्या होना बहुत आवश्यक है। पौधों की उचित संख्या के लिए आवश्यक बीज दर व पंक्ति एवं पौधे से पौधे की उचित दूरी की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। बुवाई की परिस्थितियों जैसे सिंचित व असिंचित एवं बीज के आकार को ध्यान में रखते हुये 55 से 75 कि.ग्रा. बीज प्रति हेक्टेयर काम में लेवें। कतार से कतार की दूरी 30 से.मी. रखें। सिंचित क्षेत्र में 5-7 से.मी. गहरी व बारानी क्षेत्र में नमी को देखते हुए अधिक गहरी 7-10 से.मी. तक बुवाई कर सकते हैं। असिंचित क्षेत्रों में अक्टूबर के प्रथम सप्ताह तक एवं सिंचित क्षेत्रों में 20 अक्टूबर तक बुवाई कर देवें

नोट: देर से पकने वाली प्रजातियों की बुवाई समय से अवश्य कर देना चाहिए अन्यथा उपज में कमी हो जाती है।

सिंचाई: चने की खेती अधिकतर बारानी क्षेत्रों में की जाती है परंतु सिंचाई की सुविधा उपलब्ध हो तो वहाँ मिट्टी व वर्षा को ध्यान में रखते हुए पहली सिंचाई बुवाई के 40-50 दिन बाद एवं दूसरी सिंचाई फली आने पर करें। यदि एक ही सिंचाई उपलब्ध हो तो 60 दिन पर दी जानी चाहिए। चने में हल्की सिंचाई करनी चाहिए। सिंचाई करते समय यह ध्यान दें कि खेत के किसी भाग में जल भराव की स्थिति न हो अन्यथा फसल को नुकसान हो सकता है।

शीर्ष शाखाएँ तोड़ना (खुटाई): खेत में चना के पौधे जब लगभग 20-25 से.मी. के हो तब शाखाओं के ऊपरी भाग को अवश्य तोड़ दें। ऐसा करने से पौधों में शाखायें अधिक निकलती हैं और चने में उपज अधिक प्राप्त होती है। खटाई बुवाई के 30-40 दिनों के भीतर पूर्ण करें तथा 40 दिन बाद नहीं करनी चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण: खरपतवार चना की फसल को 50-60 प्रतिशत तक नुकसान पहुंचाते हैं। अत: खरपतवार नियंत्रण फसल उत्पादन तकनीक का अभिन्न अंग है। चना की फसल में खरपतवार नियंत्रण के लिए पेन्डीमेथालिन 30 ई.सी. का 4-5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से 400-500 लीटर पानी में घोलकर बुवाई के 48 घंटे के अन्दर छिड़काव करना चाहिए। इसके बाद भी यदि खरपतवार पुन: दिखाई दे तो 30-35 दिन बाद एक निकाई करें। जिन क्षेत्रों में घास प्रजाति के खरपतवार अधिक हों वहाँ क्यूजालोफोप-इथाईल 5.0 ई.सी. का 4 मिली प्रति लीटर पानी में मिलाकर बुवाई के 20-25 दिन बाद छिड़काव करें।

उर्वरकों का प्रयोग : सामान्य स्थिति में चना की फसल के लिए 20 किग्रा नत्रजन, 40 किग्रा फास्फोरस, 20 किग्रा पोटाश एवं 20 किग्रा गंधक प्रति हेक्टेयर संस्तुत की गई है। जिन क्षेत्रों की मृदा में बोरान या मोलिब्डेनम की कमी हो वहाँ 10 किग्रा बोरेक्स पाउडर या 1.0 किग्रा अमोनियम मोलिब्डेट प्रति हेक्टेयर का प्रयोग करना चाहिए। असिंचित क्षेत्रों में मृदा में नमी की कमी की अवस्था में 2 प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव फली बनने की अवस्था में करने पर उपज में वृद्धि होती है।

खरपतवार नियंत्रण: चने की फसल के प्रारंभिक विकास में खरपतवारों द्वारा काफी प्रतिस्पर्धा होती है। यह प्रतिस्पर्धा पोषक तत्वों, नमी, प्रकाश और स्थान के लिए होती है। खरपतवार आवश्यक पोषक तत्वों जैसे की नत्रजन, स्फुर और पोटाश को अवशोषित कर इनकी उपलब्धता को कम करता है। खरपतवारों के द्वारा फसल उत्पादन में 30-80 प्रतिशत तक नुकसान हो जाता है। सीधी या खड़ी प्रजातियां, खरपतवारों द्वारा ज्यादा प्रभावित होती हैं और इनमें चौड़ी पत्ती वाले खरपतवार ज्यादा विकसित होते हैं क्योंकि इनकों ज्यादा जगह और प्रकाश मिलता है, जो की इनके विकास के लिए आवश्यक होता है। फैलने वाले चने की प्रजातियों में ज्यादातर घास खरपतवार का प्रकोप होता है। ऐसी प्रजातियों की बढ़वार तेजी से होती है जिससे विस्तृत पत्ती वाले खरपतवार का विकास अवरोधित हो जाता है। चने की फसल के विकास के प्रारंभिक चरण में शुरू के 4-6 सप्ताह में खरपतवार नियंत्रण बहुत महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इस समय खरपतवार और चने के पौधों के बीच प्रतिस्पर्धा ज्यादा होती है। चने की फसल में अनेक प्रकार के खरपतवार जैसे बथुआ, जंगली गाजर, प्याजी, मोथा, दूब, अकरी, जंगली गोभी, कृष्णनील, जंगली सरसों, चिकोरी, जंगली शलजम, मकोई, चौलाई, जंगली मूली, रसभरी इत्यादि उगते हैं। ये खरपतवार फसल के पौधों के साथ पोषक तत्वों, नमी, स्थान एवं प्रकाश के लिए प्रतिस्पर्धा करके उपज को प्रभावित करते हैं। इसके अतिरिक्त खरपतवारों के द्वारा फसल में अनेक प्रकार की बीमारियों एवं कीटों का भी प्रकोप होता है जो बीज की गुणवत्ता को भी प्रभावित करते हैं। खरपतवारों द्वारा होने वाली हानि को रोकने के लिए समय ये नियंत्रण करना बहुत आवश्यक है। चने की फसल में दो बार गुड़ाई करना पर्याप्त होता है। प्रथम गुड़ाई फसल बुवाई के 30-35 दिन पश्चात् व दूसरी 50-55 दिनों बाद करनी चाहिये। यदि मजदूरों की उपलब्धता न हो तो फसल बुवाई के तुरन्त पश्चात् पैन्डीमैथालीन की 2.50 लीटर मात्रा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर खेत में समान रूप से मशीन द्वारा छिड़काव करना चाहिये। फिर बुवाई के 30-35 दिनों बाद एक गुड़ाई कर देनी चाहिये। इस प्रकार चने की फसल में खरपतवारों द्वारा हानि की रोकथाम की जा सकती है।

पाले से बचाव: दिसंबर से फरवरी तक पाला पड़ने की संभावना रहती है। फसल को बचाने के लिए यदि आवश्यकता हो तो 0.1 प्रतिशत गंधक के तेजाब का छिड़काव करें। (यानी 1000 लीटर पानी में एक लीटर गंधक का तेजाब मिलाकर एक हेक्टेयर में स्प्रेयर द्वारा पौधों पर अच्छी तरह से छिड़काव करना चाहिये) संभावित पाला पड़ने की अवधि में इसे 10 दिन के अंतर पर दोहराते रहना चाहिये। शीतलहर और पाले से चने की सुरक्षा के लिए हल्की सिंचाई करना काफी ज्यादा लाभप्रद रहता है। पाला पड़ने से चने की फसल में फली बेधक कीट लगता है जिससे बचाव के लिए हल्की सिंचाई करें और सल्फर का छिड़काव करें। इसके अलावा इल्ली का प्रकोप होता है। इसके लिए क्लोरपायरीफॉस का 1.5 लीटर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करना चाहिए।

फसल की कटाई एवं गहाई: फसल जब अच्छी प्रकार पक जाये तो कटाई करनी चाहिये। जब पत्तियां व फलियां पीली व भूरे रंग की हो जाये तथा पत्तियां गिरने लगे एवं दाने सख्त हो जाये तो फसल की कटाई कर लेनी चाहिये। कटाई की गई फसल जब अच्छी प्रकार सूख जाये तो थ्रेशर द्वारा दाने को भूसे से अलग कर लेना चाहिये तथा अच्छी प्रकार सुखाकर सुरक्षित स्थान पर भण्डारित कर लेना चाहिये।

भण्डारण: भण्डारण के समय दानों में नमी का प्रतिशत 10 से अधिक नहीं होना चाहिए। भण्डार गृह में 2 गोली वाई एल्युमिनियम फास्फाइड प्रति टन रखने से भण्डार पर्याप्त कीटों से सुरक्षा मिलती है।

(पृष्ठ 7 का शेष)

बीज उपचारित चना- बोले घना...

इससे मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों को रोका जा सकता है। बीजों को मिट्टी में पैदा होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए फफूंदीनाशक जैसे कि कार्बेनडाजिम 12 प्रतिशत, मैनकोजेब 63 प्रतिशत डब्लयुपी 2 ग्राम से प्रति किलो बीजों को बिजाई से पहले उपचार करें। बीजों का मैसोराइजोबियम से टीकाकरण करें। इस तरह करने के लिए बीजों को पानी में भिगोकर उन पर मैसोराइजोबियम डालें। टीकाकरण कर बीजों को छांव में सुखाएं। फसलों में बीज उपचार कर लगभग 8-10 प्रतिशत उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। फसलों की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी करने हेतु आवश्यक है कि फसलों में कीड़े/बीमारियों का प्रकोप नहीं हो इसके लिये सीड ड्रेसिंग ड्रम द्वारा बीजोपचार करें।

सीड ड्रेसिंग ड्रम

- फसलों की उत्पादकता में बढ़ोत्तरी करने तथा फसलों में कीड़े / बीमारियों का प्रकोप कम से कम हो। इस उद्देश्य से बुवाई से पहले शत-प्रतिशत बीजोपचार किया जाना अत्यन्त आवश्यक है।
- बीज उपचार करते समय एफ.आई.आर. क्रम का अवश्य ध्यान रखें। बीज को सर्वप्रथम फफूंदनाशक, फिर कीटनाशी और अन्त में संवर्ध (कल्चर) से उपचारित करें।
- कटवर्म प्रभावित क्षेत्रों में बीज को 10 मिलीलीटर क्यूनालफॉस 25 ई.सी. प्रति किलो बीज की दर से मिलाकर उपचारित करने के बाद बोयें।
- चने में एक हेक्टेयर क्षेत्र के बीज के लिये 600 राइजोबियम कल्चर तथा 600 ग्राम पी.एस.बी. कल्चर का उपयोग करें।

ऐसे करें कल्चर से बीज का उपचार

- एक हेक्टे. के बीज को कल्चर से उपचारित करने हेतु 250 ग्राम गुड़ आवश्यकतानुसार पानी गर्म करके घोल बनायें।
- घोल ठण्डा होने पर इसमें 600 ग्राम जीवाणु खाद मिलायें। इस मिश्रण को एक हेक्टेयर में बोयें जाने वाले बीज में इस प्रकार मिलायें कि बीजों पर एक परत चढ़ जायें।
- बीजों को छाया में सुखाकर बुवाई करें।

सावधानियाँ

- फसल के अनुसार उपयुक्त कल्चर प्रयोग करें। कल्चर पैकेटों को ठण्डे एवं एवं छायादार जगह पर रखें।
- अन्तिम प्रयोग तिथि से पहले ही कल्चर मिलायें। गुड़ का घोल ठण्डा होने पर ही कल्चर मिलायें।
- उपचारित बीज को छाया में सुखायें एवं उर्वरकों के साथ मिलाकर नहीं बोयें।

वर्गीकृत विज्ञापन

कृषक दूत द्वारा सुधी पाठकों एवं लघु स्तर के विज्ञापनदाताओं के लिए वर्गीकृत विज्ञापन सुविधा शुरू की गई है। यदि आप अपनी आवश्यकता एवं उत्पाद सेवा की जानकारी कृषक दूत के 21 लाख पाठकों के बीच अत्यंत रियायती दर पर पहुंचाना चाहते हैं तो आप वर्गीकृत विज्ञापन का लाभ ले सकते हैं। वर्गीकृत विज्ञापन के नियम एवं शर्तें निम्नानुसार हैं।

★ 1500/- मात्र में चार बार विज्ञापन प्रकाशित किया जाएगा।
★ अधिकतम शब्दों की संख्या 30 होगी। इसके पश्चात् 2/- प्रति शब्द अधिकतम 45 शब्दों तक देय होगा।
★ वर्गीकृत विज्ञापन सेवा के अंतर्गत आने वाले विज्ञापन ही प्रकाशित किये जायेंगे।
★ वर्गीकृत विज्ञापन का भुगतान अग्रिम रूप से नकद/ मनीआर्डर/ बैंक ड्रॉफ्ट द्वारा करना होगा।
★ इसके अंतर्गत अधिकतम बुकिंग एक वर्ष तक भी की जा सकेगी।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें :-

कृषक दूत
कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम. 16, ब्लाक सी, मानसरोवर कॉम्पलेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : (0755) 4233824
मो. : 9827352535, 9425013875, 9300754675, 9826686078

सिवनी-मालवा में



कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।

श्री अभिषेक जैन
मे. कांति ट्रेडर्स
नर्मदापुरम रोड,नए ब्रिज के पास सर्विस रोड बनापुरा, जिला नर्मदापुरम (म.प्र.)

मुकेश सीड्स एण्ड जनरल सप्लायर्स
(कृषि-बागवानी सामग्री का विश्वसनीय प्रतिष्ठान)

●औषधीय●वन ●सब्जी●फूल●बीज●स्प्रे पंप एवं पार्ट्स ●कीटनाशक ●जैविक खाद ● गार्डन टूल ●जैविक उत्पाद ●ग्रीन नेट इत्यादि हर समय उचित कीमत पर उपलब्ध।
वितरक - ●निर्मल सीड्स, जलगांव ●कलश सीड्स, जालाना ●अंकुर सीड्स, नागपुर ● वेस्टर्न सीड्स, गुजरात ●दिनाकर सीड्स, गुजरात ●सटिंड सीड्स, दिल्ली ● फाल्कन गार्डन टूल्स, लुधियाना ●स्टिगा ग्रास ब्लेड, मुंबई ●जेनको गार्ड टूल्स, जालंधर ●स्काई बर्ड एग्रो इंडस्ट्रीज, अमृतसर ●अनु प्रोडक्ट्स लि. ●श्री सिद्धि एग्रो केम

112, नियर ओल्ड सेफिया कॉलेज रोड के पास, भोपाल टॉकीज रोड भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-2749559, 5258088 E-mail : mukeshseed@gmail.com

कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्राइवेट लिमिटेड ने अदरक फसल पर फील्ड डे किया आयोजित



खंडवा। खंडवा जिले के अरुड़ गांव में अदरक की फसल पर फील्ड डे का आयोजन किया गया, जिसमें 110 से अधिक किसानों ने भाग लिया। इस फील्ड डे का मुख्य उद्देश्य अदरक की फसल में बुवाई से लेकर कटाई तक विभिन्न अवस्थाओं में उत्पादों के उपयोग, फसल प्रबंधन और बेहतर उत्पादन के लिए अपनाई गई तकनीकों की जानकारी किसानों तक पहुंचाना था।

इस अवसर पर कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्रा. लि. के उत्पादों के माध्यम से अदरक की फसल के विभिन्न चरणों में किए गए प्रबंधन की जानकारी साझा की गई। फसल की शुरुआत में बीज उपचार के लिए च्हद्धस्स् का उपयोग किया गया। बेहतर जड़ विकास के लिए K Ma& Energy का प्रयोग किया गया।

फसल में फफूंदजनित समस्याओं के प्रबंधन के लिए Koksy 55 और Key Shield का उपयोग किया गया, जबकि कीट प्रबंधन के लिए Krill और Krifos त्रश्चद्यस्त्र का प्रयोग किया गया। पौधों की बेहतर वानस्पतिक वृद्धि और प्रतिकूल परिस्थितियों में तनाव प्रबंधन के लिए Paushak Super Star का उपयोग किया गया। इसके साथ ही नई कलियों के निर्माण और अदरक के बेहतर विकास के लिए Kri-CalMax का प्रयोग किया गया।

फील्ड डे के दौरान किसानों को बताया गया कि फसल की प्रत्येक अवस्था में उचित प्रबंधन और आवश्यकता के अनुसार उत्पादों का उपयोग महत्वपूर्ण है। इस कार्यक्रम के माध्यम से किसानों को अदरक की फसल में बुवाई से लेकर कटाई तक अपनाए जाने वाले विभिन्न प्रबंधन उपायों की जानकारी मिली। कार्यक्रम में 110 से अधिक किसानों की भागीदारी ने फसल आधारित तकनीकी जानकारी साझा करने और किसानों के साथ प्रत्यक्ष संवाद स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। कृषि रसायन एक्सपोर्ट्स प्रा. लि. किसानों को आधुनिक कृषि तकनीकों एवं फसल प्रबंधन संबंधी जानकारी उपलब्ध कराने के लिए निरंतर प्रयासरत है।

इफको के नवागत राज्य विपणन प्रबंधक श्री आर.के.एस. राठौर का स्वागत



भोपाल। विश्व की सबसे बड़ी उर्वरक सहकारी संस्था इंडियन फार्मर्स फर्टिलाइजर को-ऑपरेटिव लिमिटेड के राज्य कार्यालय, भोपाल में नवागत राज्य विपणन प्रबंधक आर.के.एस. राठौर का स्वागत किया गया। पदभार ग्रहण करने के अवसर पर संस्था के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पुष्प-गुच्छ भेंट कर उनका अभिनंदन किया।

श्री राठौर का कृषि एवं विपणन के क्षेत्र में लंबा और समृद्ध अनुभव रहा है। भोपाल में यह नई जिम्मेदारी संभालने से पहले वे छत्तीसगढ़ राज्य में अपनी उत्कृष्ट सेवाएं दे चुके हैं। इसके अलावा, उन्होंने नई दिल्ली स्थित इफको विपणन मुख्यालय में भी कई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियों का सफलतापूर्वक निर्वहन किया है। स्वागत समारोह के दौरान अधिकारियों और कर्मचारियों ने नवागत प्रबंधक के कुशल नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में संस्था को नई ऊंचाइयों पर ले जाने तथा राज्य के किसानों तक बेहतर सेवाएं पहुंचाने की प्रतिबद्धता दोहराई। कृषि विशेषज्ञों का मानना है कि श्री राठौर के विस्तृत रणनीतिक अनुभव का सीधा लाभ मध्य प्रदेश के कृषि परिदृश्य, उर्वरक वितरण व्यवस्था और किसान कल्याण से जुड़ी योजनाओं को मिलेगा। समस्त इफको भोपाल परिवार ने उन्हें इस नई प्रशासनिक भूमिका के लिए बधाई एवं सफल कार्यकाल की शुभकामनाएं दीं।

जेयू एग्री साइंसेस की किसान बैठक संपन्न



शाजापुर। जेयू एग्री साइंसेस प्राइवेट लिमिटेड ने शुजालपुर क्षेत्र में मेगा किसान बैठक का आयोजन किया। इस मौके पर शरद कुमार सिंह (प्रोडक्ट मैनेजर), (रीजनल मैनेजरस) रमेश सिंह व राकेश चाचरिया, (मार्केटिंग मैनेजर) पंकज शर्मा व धर्मेंद्र जाट (टेरिटरी मैनेजर)और अनेक किसान मौजूद थे।बैठक में जेयू एग्री साइंसेस प्राइवेट लिमिटेड द्वारा लहसून, प्याज, आलू और रबी मौसम में उगाई जाने वाली सभी फसलों के बारे में किसान भाइयों को नई तकनीक के साथ-साथ आधुनिक कृषि व अपने उत्पाद Ecomax+, JU Potash 2000 आदि के बारे में जानकारी दी गयी। बैठक का उद्देश्य किसानों को कृषि विज्ञान की नवीनतम तकनीकों और अनुसंधान के बारे में जागरूक करना है ताकि वे अपनी फसलों की उत्पादकता बढ़ा सकें और अपनी आय बढ़ा सकें। बैठक में विशेषज्ञों द्वारा फसल प्रबंधन व पोषण, मिट्टी की गुणवत्ता और अन्य संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई।

मालवा क्षेत्र में कृषि एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है और इस बैठक से क्षेत्र के किसानों को उनकी फसल उत्पादकता बढ़ाने और उनकी आय बढ़ाने में मदद मिलेगी। यह आयोजन क्षेत्र के किसानों को नई प्रौद्योगिकियों और अनुसंधान के प्रति जागरूक होने का अवसर प्रदान करवाया गया उन्हें अपनी कृषि प्रथाओं में सुधार करने में सक्षम बनाएगा।

तेवरी जिला कटनी में...

कृषक दूत में विज्ञापन सदस्यता हेतु संपर्क करें।



श्री प्रो. पंकज आसाटी

मे. पंकज बीज भंडार

बस स्टैंड के पास मेन रोड़- तेवरी

जिला-कटनी (म.प्र.) मो. 9893428003



किसान एग्री सॉल्यूशन बरेली में ACE किसान मिलन समारोह का आयोजन

किसानों को 10 ट्रैक्टरों की दी गई डिलीवरी





रायसेन। ग्राम बम्होरी कुंडली के समीप किसान एग्री सॉल्यूशन (ACE ट्रैक्टर डीलरशिप) बरेली के सौजन्य से भव्य किसान मिलन समारोह का आयोजन संपन्न हुआ। कार्यक्रम में क्षेत्र के लगभग 150 किसानों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। इस अवसर पर डीलरशिप द्वारा 10 नए ACE ट्रैक्टरों की डिलीवरी की गई। समारोह में आये किसान भाइयों को प्रत्येक ट्रैक्टर पर एक निश्चित उपहार भी वितरित किया गया।

समारोह में एक्शन कंस्ट्रक्शन इक्विपमेंट लिमिटेड (ACE) कंपनी की ओर से मुख्य अतिथि के रूप में सीजीएम श्री रविन्दर सिंह खनेजा, जेडएम श्री मनोज गर्ग, एरिया मैनेजर श्री अविनाश दुबे एवं श्री रूपेश देशमुख उपस्थित रहे। वहीं डीलरशिप से तेज प्रताप दुबे और कुमार अभिषेक ने अतिथियों का स्वागत किया। इसके अलावा बैंकिंग एवं वित्तीय सेवाओं से जुड़े एचडीएफसी एरिया मैनेजर पंकज दुबे, एरिया एग्जीक्यूटिव अंकित धाकड़, श्रीराम फाइनेंस के ब्रांच मैनेजर धर्मेंद्र सोलंकी, कलेक्शन मैनेजर संजय, एरिया एग्जीक्यूटिव शिवा पांडे, श्री तरुण एवं आईडीबीआई बैंक के प्रबंधक विशेष रूप से मौजूद रहे। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डीलर तेज प्रताप दुबे ने क्षेत्र के किसानों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हमारी प्राथमिकता बिक्री के बाद किसानों को बेहतर और त्वरित सर्विस प्रदान करना है। उन्होंने बताया कि पुराने ट्रैक्टरों के एक्सचेंज पर भी डीलरशिप द्वारा बेहतरीन सपोर्ट दिया जा रहा है। गौरतलब है कि मध्य प्रदेश के रायसेन जिले में खेती और ढुलाई के कामों के लिए, श्रेष्ठ ट्रैक्टर किसानों की पहली पसंद बनता जा रहा है। कंपनी के पास 15 हार्सपावर से लेकर 90 हार्सपावर तक 2WD व 4WD वैरिएंट की विशाल रेंज उपलब्ध है। किर्लोस्कर 4-सिलेंडर इंजन, पावर स्टीयरिंग, साइड गियर, डुअल क्लच, तेल में डूबे ब्रेक्स और कम डीजल खपत में हाई टॉर्क इसकी प्रमुख विशेषताएं हैं। डीलरशिप ने किसानों से नजदीकी शोरूम में संपर्क करने का आग्रह किया है।

धानुका विटावैक्स पॉवर से बीज उपचार पर बेहतर अंकुरण क्षमता और रोगों पर प्रभावी नियंत्रण

हरदा। मैं रामनिवास गुर्जर, ग्राम-कुकरावद, जिला एवं तहसील हरदा का निवासी हूँ। मेरा मुख्य कार्य खेती है। मेरे पास



लगभग 30 एकड़ जमीन है जिसमें मैं गेहूँ की खेती करता हूँ। मैंने गेहूँ बीज को उपचारित करने के लिए धानुका कम्पनी के विटावैक्स पॉवर का इस्तेमाल किया। इसके उपयोग से मुझे बेहतरीन एवं एक समान अंकुरण क्षमता देखने को मिली और शुरुआती अवस्था में लगने वाले रोगों पर भी प्रभावी नियंत्रण मिला। धानुका कंपनी के विटावैक्स पॉवर से 2 से 3 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित किया। इसका उपयोग मैं पिछले 5 वर्षों से करता आ रहा हूँ और इस वर्ष भी लगातार करूंगा। मैं अपने अनुभव के आधार पर अन्य किसान भाईयों को भी धानुका के गुणवत्तायुक्त उत्पादों के उपयोग की सलाह देता हूँ और किसान भाइयों से कहना चाहता हूं कि आप भी विटावैक्स पॉवर से बीज उपचारित करें और मुनाफा कमाएं। अधिक जानकारी के लिए मेरे मोबाइल नंबर 9399892627 पर संपर्क कर सकते हैं।



कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

कृषक दूत द्वारा प्रकाशित विभिन्न बहुपयोगी पुस्तकें



रबी फसलों की कृषि कार्यमाला मूल्य 40/- | फसलों में एकीकृत रोग प्रबंधन मूल्य 250/- | धान की उन्नत खेती मूल्य 50/- | सब्जियों की उन्नत तकनीकी मूल्य 100/- | फसलों में कीट रोग प्रबंधन मूल्य 70/- | सब्जियों में पोषक तत्व प्रबंधन मूल्य 50/- | फूलों की खेती मूल्य 70/-

धान की उन्नत खेती मूल्य 100/- | सोयाबीन की खेती मूल्य 20/- | खरीफ फसलों की खेती मूल्य 50/- | कपास की खेती मूल्य 50/- | गन्ने की खेती मूल्य 25/- | मधुपालन मूल्य 100/- | बकरी पालन मूल्य 100/-

गेंदे की खेती मूल्य 50/- | वर्मी कम्पोस्ट मार्गदर्शिका मूल्य 50/- | खरपतवार प्रबंधन मूल्य 50/- | मशरूम के वैज्ञानिक तरीके मूल्य 50/- | कृषि यंत्रों का चुनाव एवं रखरखाव मूल्य 50/- | सब्जी फसलों की खेती मूल्य 70/- | सिंघाड़ा फसल की उन्नत खेती मूल्य 50/-

गुलाब की खेती मूल्य 70/- | फलों की उन्नत खेती मूल्य 50/- | ट्रैक्टर का रखरखाव मूल्य 50/- | मिर्च की उन्नत खेती मूल्य 70/- | फलों का श्रेष्ठ उपयोग मूल्य 100/- | मधुमक्खी पालन मूल्य 150/-

कृषक दूत

मुख्य कार्यालय : एफ.एम. 16,ब्लॉक सी, मानसरोवर कॉम्प्लेक्स, रानी कमलापति रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल (म.प्र.) फोन (0755) 4233824

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्यता फार्म

कृषक दूत

कृषि एवं ग्रामीण विकास का प्रमुख साप्ताहिक

एफ.एम.-16,ब्लॉक-सी,मानसरोवर कॉम्प्लेक्स,हबीबगंज रेल्वे स्टेशन के पास, होशंगाबाद रोड, भोपाल 16 (म.प्र.) फोन 0755 4233824

मो. : 9425013875, 9827352535, 9300754675

E-mail:krishak_doot@yahoo.co.in Website:www.krishakdoot.org

सदस्य का नाम.....

संस्था का नाम.....

पूरा पता.....

ग्राम.....पोस्ट.....तहसील .....

जिला.....राज्य.....पिन कोड

दूरभाष/कार्या. ..... घर ..... मोबा. : .....

सदस्यता राशि का ब्यौरा

■ वार्षिक	: 700/-	■ द्विवार्षिक	: 1300/-
■ त्रैवार्षिक	: 1900/-	■ पंचवर्षीय	: 3100/
■ दसवर्षीय	: 6100/-	■ आजीवन	: 11000/-

कृपया हमें/मुझे कृषि एवं ग्रामीण क्षेत्र का साप्ताहिक समाचार पत्र " कृषक दूत" की सदस्यता प्रदान कर नियमित रूप से उक्त पते पर पत्रिका भेजने की व्यवस्था करें। सदस्यता राशि नकद/ मनीआर्डर/ चेक/ डिमांड ड्राफ्ट द्वारा राशि रुपए (अंकों में).....(शब्दों में).....

बैंक का नाम..... ड्राफ्ट चेक क्रमांक.....

दिनांक..... संलग्न है। पावती भेजने की व्यवस्था करें।

स्थान..... प्रतिनिधि का नाम हस्ताक्षर सदस्य

दिनांक..... एवं हस्ताक्षर एवं संस्था सील

उम्मीद से
ज़्यादा का वादा

ACE TRACTORS

50 HP Chetak DI 65 (4WD)

4 सिलिण्डर का 4088 CC दमदार इंजन

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- 4088 cc का दमदार इंजन
- ड्रयल क्लच
- हैवी ड्यूटी फ्रंट एक्सल (करारो)
- लिफ्ट 2000 kg
- आगे के टायर 9.5x24
- पीछे के टायर 16.9x28
- MRF Tyre





दमदार ट्रैक्टर
शानदार परफॉर्मेंस

DI 350 NG | 40 HP

विशेषताएं

- पॉवर स्टीयरिंग
- लिफ्ट 1200 kg
- 2858 cc का दमदार इंजन
- ऑयल ब्रैक्स (तेल में डूबे)
- सिंगल / ड्रयल क्लच
- आगे के टायर 6x16
- पीछे के टायर 13.6x28
- इंजन रेटिड 1800 rpm

हर कदम हर डगर
ACE TRACTORS
हर किसान का हमसफर

100% Swadeshi

ACE ट्रैक्टर 15–90 HP में उपलब्ध

कस्टमर हेल्प लाइन 1800 1800 004

अग्रणी बैंकों एवं प्राईवेट फाइनेन्स कम्पनियों द्वारा आसान किश्तों में फाइनेंस उपलब्ध

रिक्त स्थानों में डीलरशिप के लिए सम्पर्क करें - संजय कुमार : 9540943883

ACTION CONSTRUCTION EQUIPMENT LTD.

Marketing Office :- Jajru Road, 25th Mile Stone, Mathura Road, Ballabgarh, Faridabad-121004, Haryana, India
Phone : 0129-2306111, Website : www.ace-cranes.com

Hero
HF Deluxe
बाइक दमदार दाम शानदार
एक्स-शोरूम कीमत
₹59 999/-*
(सेल्फ़-स्टार्ट)
कम डाउन पेमेंट | ₹5999/-*
Hero GoodLife सोने का सिक्का जीतने का मौका*
pine labs कैशबैक ₹5000/- तक*
TOLL FREE 1800 266 0018
Hero MotoCorp Ltd. Regd. Office: The Grand Plaza, Plot No. 2, Nelson Mandela Road, Vasant Kunj Phase - II, New Delhi-110070, India. CIN: L35911DL1984PLC017354. For further information, contact your nearest Hero MotoCorp authorised outlet or CALL TOLL FREE 1800 266 0018 or visit us on www.heromotocorp.com. Accessories and features shown may not be part of standard fitment. Always wear a helmet while riding a two wheeler. *Finance offers are at the sole discretion of the financier, subject to its respective T&Cs. *Offer valid only on purchase of new Hero Two Wheeler & Hero GoodLife Enrollment on the corresponding purchase till 31st July 2026. #The Cashback of 5% upto ₹5000 is applicable on the transaction between ₹30 000 to ₹1 00 000. The now revised ex-showroom price is valid for a limited period only. Hero MotoCorp reserves the right to modify or withdraw any or all offers without prior notice. *1 ex-showroom price of HF Deluxe Canvas Self drive variant applicable in Madhya Pradesh. *Terms & Conditions apply.

अधिकृत डीलर: भोपाल: नरेश्वरन हीरो (प्रसाद पेट्रोल पंप, हायवेल रोड 9289922466, जे.के. रोड 8959905381), सीहोर हीरो (टी.आई.जी. नगला, सेहसिया रोड) 9289922685, यूनाइटेड हीरो (कोहेफिजा) 9289923150, होशंगाबाद: सुखमणी हीरो (अन्नपूर्णा रोड) 9269922719, पी.एन. हीरो (एयरपोर्ट रोड) 9269923061, टोली ऑटोमोबाइल्स (भवरकुआँ) 9269923211, रत्नाकारानी ऑटोमोटिव (एलआईजी रक्षायर के पास) 9671444414, मेहता ऑटोमोबाइल्स (देवाडा नाका), 9827141577, ग्वालियर: तनुष्का हीरो (सिटी सेन्टर 9269922371, मुरार 4099998, छन्नू 4079000), सतना अंगद हीरो (फूलबाग 9269922483, सालियों विलास 2438534), जबलपुर: सुपर हीरो (सतना सिविल लाईन्स) 9269922350, सुदर्शन हीरो (नेपियर टॉउन 9269922353, गढ़ा गाहल 9111100352, दमोह नाका 9111100344), इन्दौर: शिप्रा हीरो (फ्रीगंज, देवास रोड) 9269922354, लोहिया हीरो (सिंगलगंज मंडी के सामने) 9269922718, बेतूल: खण्डेलवाल हीरो, 9269922624, रीवा: मंत्री हीरो (कन्हैयालाल मंत्री पेट्रोल पंप, इंदौर नाका) 9522257567, ब्यावरा: आनंद हीरो 9269922071, गुना: गगन हीरो 9269922350, अशोक नगर: आदर्श हीरो 9821743269, होशंगाबाद: पुण्यश्लोका हीरो 9269922360, हरदा: राहुल हीरो 9269922491, विदिशा: पाल हीरो 9269922379, दमोह: इण्डिया ऑटो हीरो 9269922573, सागर: सेन्ट्रल हीरो (अगरवालगंज, मल्होलिया) 9269922376, टीकमगढ़: आनंद हीरो 9269923112, छतरपुर: आनंद हीरो (झांसी रोड 9269922374, पन्ना रोड 7389238472), नरसिंहपुर: जैन हीरो 9269922742, मुरैना: गुप्ता हीरो 9269922372, देवास: खुराना हीरो (ए.बी. रोड 9269922488, गंगाकलां 9993596392), रीवा: साथी हीरो 9269922618, हाट पिपलिया: श्रीराम हीरो 9269923154, झाबुआ: नाकोड़ा हीरो 9269922679, कुक्षी: अन्नपूर्णा हीरो 9269922749, खण्डवा: तवक्कर हीरो 9269923019, खरगोन: निमाड़ हीरो 9269922370, मंडला: लक्ष हीरो 9269923176, गौरझमपुर: रघुवंशी हीरो 9269923047, रानापुर: राजेश हीरो 9269922774, बालाघाट: गायत्रीवाल हीरो 9269922572, छिन्दवाड़ा: सत्कार हीरो 9269922805, मन्डला: शुभा हीरो 9269922600, ललितपुर: दयाल हीरो 9269922377, सीधी: बद्रिका हीरो (टी.पी. नगर 9752263333, इलाहाबाद रोड 9171705391), सतना: स्टार हीरो 9269922356, नरसिंहपुर हीरो 9269923108, सहडोल: निगोद हीरो 9269923109, गुप्ता हीरो 9269922370, कटनी: हर्ष हीरो 9269923166, सेहोर: कुन्दन हीरो 9269922743, नागदा जंक्शन 7354559000, सीधी: राजेन्द्र मोटर्स 9269923113, शिवनी: राघवेन्द्र हीरो 9621745435, चौरई: श्रीजी ऑटोमोबाईल्स, 9621749342, भिण्ड: शिवम हीरो 9269922767, दतिया: शिव हीरो 9269923172, मुरैना: गगन हीरो 9269922670, श्योपुर: आशीष हीरो 9269922632, शिवपुरी: रघुवंशी हीरो 9269922571, बड़वानी: स्वास्तिक हीरो 9269922773, सागरपुर: बाबा हीरो 9269922833, रतलाम: एक्सीलेन्ट हीरो (मंडू रोड 9269922375, सैलाना रोड 07412-408600) नीमच: उत्तम हीरो 9269922367, मन्दसौर: दामोदरम हीरो 9269922369, जावद: हिरोयानल हीरो 9269923045.

रायपुर: छत्तीसगढ़ हीरो 9269922361, आरंग: अग्रवाल हीरो 9269922964, राजनांदगांव: जय हीरो 9269922357, धमतरी: सत्योग हीरो 9269922525, कांकेर: राहुल हीरो 9269922934, महासमुंद: वत्स हीरो 9269922623, नवलदाबाजार: अग्रवाल हीरो 9269922959, आरंग: श्री राम हीरो 9269922966, बेमेतरा: श्री लाई हीरो 9269922835, कवर्धा: सरस्वती हीरो 9269922956, जगदलपुर: विजयपाल हीरो 9269923064, दंतेवाड़ा: जय विजय हीरो 9269922990, दल्लीराजहरा: लक्ष्मी हीरो 9269922983, भाटापारा: कुशल हीरो 9269923052, सिलाई: इंदिरम हीरो 9269922355, चौहान मोटर्स 9269233817, दुर्ग: उत्सव हीरो 9269923114, उत्सव हीरो 7000595300, बिलासपुर: सरना हीरो 9269922464, गौरेलेक्सी हीरो 9269922708, अंबिकापुर: आनंद हीरो 9269922359, सरगुजा हीरो 9269923110, कोरबा: शांति हीरो 9269922813, छत्तीसगढ़ हीरो 9269923057, रायगढ़: गोयल हीरो 9269922373, आदित्य हीरो 9269923091, जांजगीर: आनंद हीरो 9269922772, बैकुंठपुर: आर.के. हीरो 9269922612, जशपुर: आकाश हीरो 9269922909.